सन्मति साहित्य-रत्न-माला का बासठवाँ रत्न

गीत-गुञ्जार

गीतकार —

स्थविर पद विभूषित, शान्त मुद्रा, पूज्य गुरुदेव,
श्री श्यामलाल जी महाराज के सुशिष्य
तपस्वी श्री श्रीचन्द जी महाराज,
तच्छिष्य
श्री कीर्तिचन्द्र जी महाराज "यश"

सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा

पुस्तक –
* गीत-गुञ्जार
गीतकार –
* श्री कीर्तिचन्द्र जी महाराज "यश"
प्रकाशक –
* सन्मति ज्ञान पीठ, आगरा
मुद्रक –
* श्री रघुनाथ प्रिंटिंग प्रेस, राजामण्डी, आगरा
* श्री रॉयल फाइन आर्ट प्रेस, मेठगली, आगरा
* श्री कश्मीर प्रेस, लड्डू गली, आगरा
* श्री नवजीवन इलैक्ट्रिक प्रेस,
मोती कटरा, आगरा
चित्रकार –
* श्री बद्रीप्रसाद जी
* श्री मदनगोपाल जी
आवृत्ति काल –
* अक्षय तृतीया, संवत् २०१७ विक्रम
* २८ अप्रैल, सन् १९६० ईस्वी
आवृत्ति –
* प्रथम
संख्या –
* ग्यारह सौ पच्चीस
मूल्य –
* तिरेसठ नये पैसे
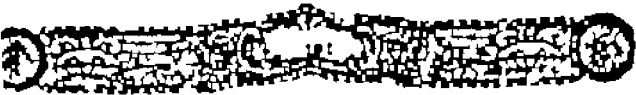
प्रकाशक की ओर से

मुझे यह प्रसन्नता है कि 'सन्मति ज्ञान पीठ' के सुन्दर एवं चमत्कार प्रकाशनों की लड़ी की एक कड़ी 'गीत-गुञ्जार' भी पाठकों के हाथों में पहुँच रहा है।

मुनि श्री 'पद्म' जी के गीतों में सरसता है मधुरता है और है भावों की मन मोहक सुन्दरता। साहित्य व धर्म का योग कितना सुन्दर है। मुनि श्री का श्रम सफल होगा यदि प्रेमी पाठक, सिनेमा के गीतों को भूल कर इन मधुर गीतों को अपने मधुर स्वर से झंकृत किया करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन में जिन सज्जनों की ओर से संस्था को आर्थिक सहयोग मिला है, संस्था अपनी ओर से उस सुन्दर सहयोग के लिए धन्यवाद करती है।

सहयोग इस प्रकार है —

१२५) श्री किशनलाल जी, आनन्दकुमार जी जैन, कैथल जि० करनाल, (पजाब)

१५१) श्री आनन्दप्रकाश जी जैन काधला (मुजफ्फर-नगर) की पुण्य स्मृति मे, उनकी प्रिय बहिन श्री शान्तादेवी जैन, धर्म पत्नी श्री महावीर प्रसाद जी जैन, मितलावली वाले, हाल कोरबा, जि० बिलासपुर (मध्यप्रदेश)

आशा है कि हमारे प्रेमी सहयोगी भविष्य मे भी सहयोग प्रदान कर के हमे सुन्दर प्रकाशनो के लिए उत्साहित करते रहेंगे।

सन्मति ज्ञान पीठ,
लोहामडी, आगरा।
२८—४—६०

दिशा-संकेत

•

•

•

कला मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। कला रहित जीवन शून्य है। कला मानव जीवन में चेतना का संचार करती है। मनुष्य का जीवन अशन वसन एवं भवन पर ही आधारित नहीं है। इस सब से ऊपर वह कला से प्रेम करता है। उस की साधना करता है। मनुष्य अपने सहज स्वभाव से 'सत्यं शिवं सुन्दरम्" का उपासक है।

मानव जीवन में काव्य-कला और संगीत कला सब से ऊँची कलाएं हैं। संगीत की मधुर स्वर लहरी से मानवी मन आप्लावित हो जाता है काव्य और संगीत दोनों सहचर हैं।

'गीत-गुञ्जार' में दोनों कलाओं का सुन्दर संगम हो गया है। इस में काव्य-कला का सौकुमार्य और संगीत कला का माधुर्य दोनों का सुखद सामञ्जस्य है।

गीतकार द्वारा समय-समय पर रचित गीतों का इस में सुमेल मिलेगा। इस सिनेमा युग ने जन-मानस पर अपनी गहरी छाप लगा दी है। सिनेमा द्वारा प्रसारित गीतों की स्वर लहरी आप को मृदु मुखी—बचपन से लेकर दन्त-विहीन बुढ़ापे तक मे से सुनने को मिलेगी। उन

सहयोग इस प्रकार है —

१२५) श्री किशनलाल जी, आनन्दकुमार जी जैन, कैथल जि० करनाल, (पंजाब)

१५१) श्री आनन्दप्रकाश जी जैन काधला (मुजफ्फर-नगर) की पुण्य स्मृति मे, उनकी प्रिय बहिन श्री शान्तादेवी जैन, धर्म पत्नी श्री महावीर प्रसाद जी जैन, मितलावली वाले, हाल कोरबा, जि० बिलासपुर (मध्यप्रदेश)

आशा है कि हमारे प्रेमी सहयोगी भविष्य मे भी सहयोग प्रदान कर के हमे सुन्दर प्रकाशनो के लिए उत्साहित करते रहेगे।

सन्मति ज्ञान पीठ,
लोहामडी, आगरा।
२८-४-६०

मन्त्री —
सोनाराम जैन

किस को ?

•

•

•

उन गायकों और भावकों को।
जिन की अन्तश्चेतना 'मंगल'-मय
जीवन के लिए लालायित रहती है
जिनकी रक्त-धारा 'जागरण'-मय
जीवन के लिए गतिशील रहती है
जिन के मस्तिष्क में संचित 'उद्बोधन'
तूफानों से खेलने को मचलते रहते हैं
जिन का हृदय 'वैराग्य' प्राप्ति के-
लिए मचलता रहता है
और जिन के हृदय में ये 'विहँसती-कलियाँ'
निरन्तर अठखेलियाँ करती रहती हैं
उन्हीं गायकों को मेरा यह गीत-गुञ्जार
मस्ती के गीत गाने को प्रस्तुत है ॥

•

•

•

—ज्योति मुनि—

गीत
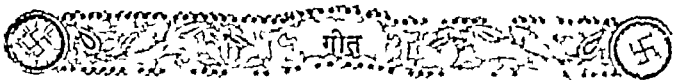
गीतो का सगीत अवश्य ही मधुर होता है, परन्तु उन की भावनाएं, मानवी मन को सतह पर अच्छी छाप नही छोडती, क्योकि वे रोटी के मोर्चे पर से निकाले सगीत स्वर हैं, मनुष्य के अन्तस्तल से निकला धर्ममय सगीत नही।

"गीत-गुञ्जार" मे आप को मिलेगा, आधुनिक सगीत मे भारत का धर्ममय एव आध्यात्म सन्देश। जिसे सुन-पढ कर आप आत्म विभोर हो सकेंगे। स्वर माधुरी मे आध्यात्म योग की गहराई इस मे आप को मिल सकेगी।

प्रस्तुत पुस्तक पांच प्रकरणो मे विभक्त है- मगल, जागरण, उद्बोधन, वैराग्य, विहँसती कलियाँ। वर्गीकरण बडा ही सुन्दर एव व्यवस्थित हुआ है।

गीतो की भाषा सरल, सरस और मधुर है। भावाभिव्यञ्जना और कल्पना के रग-विरगे पुष्प, अध्येता को मुग्ध बना देते है। अनुप्रास की छटा भी जगह-जगह माधुर्य प्रदान करती रहती है।

गीतकार मुनि श्री कीर्तिचन्द्र जी "यश" अभी उदीयमान गीतकार है। इन के गीतो मे जो माधुर्य एव सौकुमार्य है, वह भविष्य के लिए शानदार सकेत है, बिखरे रग-विरगे पुष्पो से जिस सुन्दर माला का गुम्फन गीतकार ने किया है, उस मे वह सफल है, यह नि सन्देह है।

अक्षय तृतीया,
२८-४-६०
जैन भवन लोहामण्डी
आगरा

—विजय मुनि—

किस को ?

•

•

•

उन गायकों और गायकों को।

जिन की अन्तश्चेतना 'संगम' –मय
जीवन के लिए लालायित रहती है
जिनकी रक्त-धारा 'जागरण' – मय
जीवन के लिए गतिशील रहती है
जिन के मस्तिष्क में संचित 'उद्बोधन'
तूफानों से लड़ने को मचलते रहते हैं
जिन का हृदय 'वैराग्य' प्राप्ति के–
लिए मचलता रहता है
और जिन के हृदय में ये 'विहँसती-कलियाँ'
निरन्तर अठखेलियाँ करती रहती हैं
उन्हीं गायकों को मेरा यह 'गीत-गुञ्जार'
मस्ती के बीच गाने को प्रस्तुत है॥

•

•

•

—प्रीति मुनि—
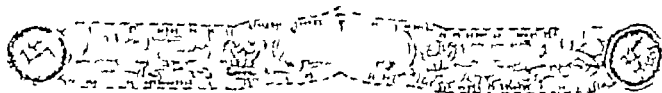
क्या ? कहाँ ......?

१– मगल	पृष्ठ १३ से ३२ तक
२– जागरण	पृष्ठ ३५ से ५२ तक
३– उद्वोधन	पृष्ठ ५५ से ८४ तक
४– वैराग्य	पृष्ठ ८७ से ११२ तक
५– विहँसती कलियाँ	पृष्ठ ११५ से १२८ तक

गीत गुञ्जार
—कीर्ति मुनि

क्या …? कहाँ ….?

१– मगल	पृष्ठ १३ से ३२ तक
२– जागरण	पृष्ठ ३५ से ५२ तक
३– उद्वोधन	पृष्ठ ५५ से ८४ तक
४– वैराग्य	पृष्ठ ८७ से ११२ तक
५– विहंसती कलियाँ	पृष्ठ ११५ से १२८ तक

मं
ग
ल

चौबीसों जिनराज ध्याए जा

[तर्ज —नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूंढू रे सांवरिया——]

चौबीसों जिनराज हितंकर ध्याए जा ओ बन्देया !
जो चाहे कल्याण सदा गुण गाए जा ओ बन्देया ।।ध्रु वा।।

ऋषभ देव श्री अजितनाथ जिन सम्भव अन्तर्यामी जी
अभिनन्दन हैं कर्म निकन्दन सुमतिनाथ शिवगामी जी ।
पद्म सुपार्श्व चरण-कमल शिर, नाए जा ओ बन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर ध्याए जा ओ बन्देया ।।

चन्द्र प्रभु, चन्दा सम निर्मल सुविधि नाथ हितकारी जी
शीतल जिनवर श्रेयांस प्रभु वासुपूज्य ब्रह्मचारी जी ।
विमल बुद्धि दातार, विमल जिन ध्याएजा ओ बन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर, ध्याए जा ओ बन्देया ।।

अनन्त नाथ प्रभु धर्म जिनेश्वर, राग-द्वेष संहारी जी
शान्ति नाथ प्रभु,शान्ति दाता जिन मिरगी मारि निवारी जी ।
कुंथु अरह, श्री मल्लि चरण-चित लाए जा ओ बन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर, ध्याए जा ओ बन्देया ।।

मुनिसुव्रत नमिनाथ नेमि जिन राजमती को त्यागी जी
पाप उद्धारक पार्श्व प्रभु, श्री वर्द्धमान बैरागी जी ।।
पाद-पद्म का ले शरणा सुख पाए जा ओ बन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर, ध्याए जा ओ बन्देया ।।

गण-नायक गौतम को सिमरो रिद्धि-सिद्धि के दाता जी
शुद्ध मन सेती 'मुनि कीर्ति' जिनवर के गुण गाता जी ।
अमर अमर बन 'यश' सौरभ फैलाए जा ओ बन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर, ध्याए जा ओ बन्देया ।।

चौबीसों जिनराज ध्याए जा

[तर्ज — नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूंढूं रे सांवरिया ——]

चौबीसों जिनराज हितकर ध्याए जा ओ वन्देया ।
जो चाहे कल्याण सदा गुण गाए जा ओ वन्देया ॥ध्रु०॥

ऋषभ देव श्री अजितनाथ जिन संभव अन्तर्यामी जी
अभिनन्दन हैं कर्म निकन्दन सुमतिनाथ शिवगामी जी ।
पद्म सुपार्श्व चरण-कमल शिर नाए जा ओ वन्देया
चौबीसों जिनराज हितकर ध्याए जा ओ वन्देया ॥

चन्द्र प्रभु, चन्दा सम निर्मल सुविधि नाथ हितकारी जी
शीतल जिनवर श्रेयांस प्रभु, वासुपूज्य शुभकारी जी ।
विमल बुद्धि दातार, विमल जिन ध्याएजा ओ वन्देया
चौबीसों जिनराज हितकर, ध्याए जा ओ वन्देया ॥

अनन्त नाथ प्रभु धर्म जिनेश्वर, राग द्वेष संहारी जी
शान्ति नाथ प्रभु शान्ति दाता जिन मिरगी मारि निवारी जी ।
कुंथु अरह, श्री मल्लि चरण-चित लाए जा ओ वन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर ध्याए जा ओ वन्देया ॥

मुनिसुव्रत नमिनाथ नेमि जिन राजमती को स्वामी जी
नाम उच्चारक पार्श्व प्रभु, श्री वर्द्धमान वैरागी जी ॥
पार्श्व-पद्म का ले शरणा सुख पाए जा ओ वन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर, ध्याए जा ओ वन्देया ॥

गण-नायक गौतम को सिमरो रिद्धि-सिद्धि के दाता जी
शुद्ध मन सेती "मुनि कीर्ति" जिनवर के गुण गाता जी ।
अमर अमर बन 'यश' सौरभ फैलाए जा ओ वन्देया
चौबीसों जिनराज हितंकर ध्याए जा ओ वन्देया ॥

वर्द्धमान

[तर्ज —महावीर, महावीर, महावीर, महावीर]

वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान ॥ध्रुव॥

भव सागर से चाहे अगर तरना ,
दीन-दुखियो के सकट सदा हरना ।
सेवा जाति व देश की नित करना ,
नाम हृदय मे एक यही धरना ॥

वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान ॥

दुनियाँ फानी है, दिल न जरा भी लगा,
पाप कर्मों को मूल से दे तू भगा ।
ज्योति सत्य अहिंसा की जग मे जगा ,
हो कर मस्त प्रभु का सदा नाम गा ॥

वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान वर्द्धमान ॥

चक्कर योनि चौरासी मे खाता रहा ,
नाना दुख मनुज तू , उठाता रहा ।
जीवन अपना अमोलक गँवाता रहा ,
धर्मी वन कर न यह रट लगाता रहा ॥

वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान ॥

पूर्व सचित पुण्य हुआ जव उदय ,
पा के जन्म मनुज का हुआ तू अभय ।
जीवन सफल वनाले यही है समय ,
"यश" जग मे फैला जिमसे हो तेरी जय ॥

वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान, वर्द्धमान॥
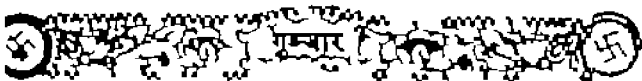
प्रभु शान्ति नाथ

[तर्ज:—मोहन की मुरलिया बाजे मो——]

हम शान्तिनाथ गुण गाएं, मो——
नित शान्तिनाथ को ध्याएं ॥ध्रुव॥

हस्तिनापुर में जन्म लिया है, अचला मात दुलारे।
विश्वसेन के नन्दन प्यारे, जन-मन-नयन सितारे॥
हम वन्दन कर हर्षाएं, मो—— ।।

मिरगी रोग बहुत था छाया प्रभु ने आन मिटाया।
सुखी किया जनता को प्रभु ने प्रेम पियूष पिलाया॥
ले शरणा हम भी तिर जाएं, मो—— ।।

चक्रवर्ति पद छोड़ प्रभु ने अन्त में दीक्षा धारी।
केवल ज्ञान अरु दर्शन पाया कर्म-कटक संहारे॥
हम नित उठ शीश झुकाएं, मो—— ।।

चरण-शरण में आया 'कीर्ति' भव दुःख से घबराई।
जीवन नैया डूब रही है, जल्दी करो सहाई।
हम प्रभु नाम धन पाएं, मो——।।

—:o:—

नवकार महिमा
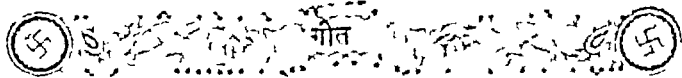
[तर्ज — चुप चुप खड़े हो जरूर कोई बात है, पहली।]

भव भय हारी यह, मन्त्र नवकार है।
आगम का सार है जी, आगम का सार है ॥ध्रुव॥

श्रद्धा से जिसने भी इस को जपा है,
सभी दुःख-संकट उसी का मिटा है।
इस के प्रभाव से सदा ही, जय-जयकार है,
आगम का सार है जी, आगम का सार है ॥

सीता ने जिस दम जपा मन्त्र प्यारा,
जपते ही उसका मिटा दुःख सारा।
कूद के अगन कुण्ड, किया जल धार है,
आगम का सार है जी, आगम का सार है ॥

सभा मे द्रोपदी ने शरणा तेरा लिया,
दुष्टो मे उस को शीघ्र छुडा दिया।
चीर बढ़ा देखते ही, देखते अपार है,
आगम का सार है जी, आगम का सार है ॥

जो भव्य प्राणी है, शरणे मे आ गया,
"यश" की सुगन्ध प्यारी जग मे फैला गया।
कर्म-फन्द छूटे, हुआ जग से उद्धार है;
आगम का सार है जी, आगम का सार है ॥

वीर प्रभु बोल

[तर्ज:—नमी दी वस्ति दा नहीं ऐतबार......]

बन्दे! तेरा इस में क्या लगदा है मोल।
वीर प्रभु वीर प्रभु वीर प्रभु बोल ॥ध्रु.॥

वीर नाम जप बन्दा तिर जांवदा।
कर्म खपाई बन्दा मुक्ति पांवदा ॥
वीर नाम जपन में लगना न मोल।
वीर प्रभु, वीर प्रभु, वीर प्रभु बोल ॥

जपे वीर नाम तो न आवे आंच जी।
वीर जपे दुःख टले कहूं सांच जी ॥
सच्चा नाम वीर प्रभु है अनमोल।
वीर प्रभु वीर प्रभु वीर प्रभु बोल ॥

एत्थे रह जान बल कोठी बंगला।
परभव जाना राजा हो या कंगला ॥
दुःख मिले पर भव वीर नाम बोल।
वीर प्रभु, वीर प्रभु, वीर प्रभु बोल ॥

वीर नाम जपियाँ न होवे ख्वार जी।
वीर नाम जपियाँ तो बेड़ा पार जी ॥
वीर नाम रहंदा हरदम ही कोल।
वीर प्रभु वीर प्रभु वीर प्रभु बोल ॥

गुण गावे महाराज श्यामसाग जी।
एह कहो बड़ा सम्पत था के नाम को ॥
वीर नाम जपो सभी दिल नूं खोल।
वीर प्रभु, वीर प्रभु, वीर प्रभु बोल ॥

वीर गुण गाले

[तर्ज — वलम श्रो, श्रो यलम, मोरे मन में ''']

मना रे, श्रो मना रे ! वीर जिनन्द गुण गाले ॥ध्रुव॥
हार्दिक भाव से प्रभु-चरण मे, अपना चित्त लगाले ।
वीर प्रभु की वाणी से निज, जीवन उच्च वनाले ॥
रवि सा तेज झलकता जिनका, ऐसे वीर जिनेश ।
प्रणमत चरण-कमल मे जिनके, सादर नित्य सुरेश ॥
भूतल ऊपर वीर सरीखा, और नही है वीर ।
कीर्ति जग मे व्याप्त जिन्हो की, सागर सम गम्भीर ॥
जग-नायक का नाम सुमरले, भव-जल तारण यान ।
यश" सौरभ महका जगत मे, पाले मुक्ति स्थान ॥

— ० —

वीर ने क्या किया ?

[तर्ज —मेरे लिए जहान में, चैन है ना करार']

सोने से तूने ऐ प्रभो ! आ कर जगत जगा दिया ।
देकर के ज्ञान रोशनी, मुक्ति का पथ बता दिया ॥ध्रुव॥
भारत मे ठौर ठौर पर, खून के नाले वहते थे ।
झरना दया का कर कृपा, सर्वत्र ही वहा दिया ॥

दीन-दुखी की जो दशा देखी तो धीर रो उठे।
उन्न बना के आप ने सबको गले लगा लिया॥
पूजते थे नाना देवता भटके थे अन्धकार में।
'आत्मा स्वयं प्रभु' बता पाखण्ड-गढ़ ढहा दिया॥
हो कर्म चक्र से अलग विश्व में 'कीर्ति' फैला।
करके जगत कल्याण फिर अजर अमर पद लिया॥

—•—

वीर महिमा

[तर्ज:—जिसका बेकरार है यहाँ बहार है, आजा——]

वीर भगवान ने कृपा निधान ने।
आन अवतार लिया श्री वर्द्धमान ने॥ध्रु.॥

दीन-दुखी की सुनी पुकारें, प्रभु जी भू पर आए जी।
सुखम कर आ करके प्रभु ने सब के दुःख मिटाए जी॥
कुण्डलपुर में जन्म लिया है, पिता सिद्धार्थ कहाए जी।
त्रिशलानन्दन देख आपको मनुज सभी हर्षाए जी॥
तीस वर्ष की यौवन वय में प्रभु ने दीक्षा धारी जी।
कर्म घातिया नष्ट किए हैं करके जप-तप भारी जी॥
पशु-बलि से था भारत में पाप बहुत ही छाया जी।
वाणी सुधा वर्षा कर प्रभु ने झण्डा-दया लहराया जी॥
पशु चण्डकौशिक का दुःख मेटा चन्दनबाला तारी जी।
गोवाले पर अनुकम्पा कर, शीतल दृष्टि डारी जी॥
'कीर्ति' आया शरण आप की, भव-दुःख से घबराई जी।
जीवन नैया डूब रही है, जल्दी करो सहाई जी॥

नवकार

[तर्ज —अफसाना लिख रही हूँ दिले··]

ससार मे महान्, मन्त्र नवकार है।
जिसके गुणो का विश्व मे, नहीं पाया पार है ॥ध्रुव॥

है मोक्ष दायक, पाप-मल का काटने वाला।
श्री मूल मन्त्रो का, सभी आगम का सार है ॥

जिस वक्त सुदर्शन पर, सकट घोर था छाया।
वह स्वर्ण सिंहासन, बना शूली की धार है ॥

सोमा सती ने, ध्यान जिस वक्त लगाया।
झट कर सर्प का बनाया, पुष्प-हार है ॥

जिसने लिया शरण तेरा, श्री मन्त्र वर प्यारे!
छाई उसी की "कीर्ति" जग मे अपार है ॥

पार्श्वनाथ

[तर्ज —आदि नाथ नमस्कार आप हो]

पार्श्व नाथ करो पार।
नाथ पावन चरण मे, बार-बार नमस्कार ॥ध्रुव॥
काशी नगरी के मझार, आन लीनो अवतार ॥
मात वामा के दुलारे, अश्वसेन प्राणाधार ॥
कमठ योगी को सुधार, दीना उस को सद्-विचार ॥
दुःख सिन्धु है अपार, तुम बिना को तारण हार ॥
नाथ! कैवल्य ज्ञान धार, पा लिया है मोक्ष द्वार ॥
"कीर्ति" तेरी है अपार, तीन लोक के मझार ॥

प्रभु वीर जपले

[तर्ज:—इस दुनिया में सब चोर चोर, कोई पैसा—]
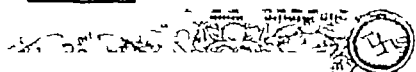
मन जपले तू प्रभु वीर-वीर।

प्रभु करते जगत कल्याण धीर हरते हैं जगत की पीर।।मन.।।

क्यों गाफिल होकर सोता है? अनमोल समय क्यों खोता है?

जो सोता है वो रोता है नहीं कोई बंधाता उसे धीर।।

प्रभु नाम लिया है जिसने भी सुख-सम्पति पाई उसने ही।

की धर्म कमाई जिसने भी मिट गई उसी की सकल पीर।।

जब चन्दना ने प्रभु नाम लिया जिस वक्त प्रभु का ध्यान किया।

उस वक्त जगत को दिखा दिया होती है धर्म की जय आखीर।।

प्रभु न पर संकट जब आया उसने था तब प्रभु-गुण गाया।

तब रक्षक बन कर प्रभु आया देखत-देखत दिए वस्त्र चीर।।

जो भी प्रभु नाम पुकारी है जिसको प्रभु की रट प्यारी है।

उसका 'यश' जग में भारी है जो नाव लगे भव सिन्धु तीर।।

गुरुवर ऋषिराज

[तर्ज—कुमति को सुमतिनाथ——]

गुरु वर ऋषिराज महाराज।।ध्रु.।।

जपते सदाचार नाम से होवत पूर्ण काज।।

तपसि मुनि ज्ञानी ध्यानी हैं तारण तरण जहाज।।

राजत विश्व में गुरुवर ऐसे जैसे शीश पे ताज।।

महा रिपु मोह नाश है मारे तजे सभी सुख-साज।।

'राज कीर्ति' चरणागत की राखो अब तो लाज।।

भक्त-भावना

[तर्ज — हम को तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो]

दिल मे हमारे अय प्रभो ! तेरा ही बस ध्यान हो।
मस्तक झुके तव चरण मे, मुख से तेरा गुणगान हो ॥ध्रुव॥

सुख मे न भूलूं मैं धर्म को, दुःख मे भी न छोड़ूं कदा,
ध्यान अटूट लगा रहे, तव चरणो मे मेरा सदा।
त्याग सभी अभिमान को, तेरा ही अभिमान हो,
दिल मे हमारे अय प्रभो ! तेरा ही बस ध्यान हो॥

दीन-दुखी जो मुझे मिलें, सेवा मे उनकी लगा रहूँ,
कष्ट अनेको झेल लूं, किन्तु उन्हे सुखी करूं।
सेवा-व्रती बनूं सदा, एक यही बस आन हो,
दिल मे हमारे अय प्रभो ! तेरा ही बस ध्यान हो॥

अपना पराया भूल कर, पर हित मे जुट जाऊं मैं,
सन्त गुणी जन जब भी मिलें, श्रद्धा से शीश झुकाऊं मैं।
सत्य विवेक बने रहे, कर्तव्य का कुछ भान हो,
दिल मे हमारे अय प्रभो ! तेरा ही बस ध्यान हो॥

विश्व मे "कीर्ति" हो मेरी, ऐसा मुझे वर दीजिए;
जीवन सफल करलूं प्रभो ! ऐसी कृपा कुछ कीजिए।
काटूं कर्म बन्धन तथा, मुक्ति मे मेरा स्थान हो
दिल म हमारे अय प्रभो ! तेरा ही बस ध्यान हो॥

शान्तिनाथ

[तर्ज—सावन की मल्हार कोयलिया—]

जपो शान्ति जिन सार जिनवरा ।
शान्ति शान्ति दातार ॥ ध्रुव ॥

गुण-गण धारी पर उपकारी भव भय भञ्जन हार ॥
रूप है सुन्दर अचला-नन्दन विश्वसेन आधार ॥
देखत ही कट जावें बन्धन होवे जय-जयकार ॥
वक्त पड़े पर जो नर ध्यावे उस दुख मोचन हार ॥
श्रीशान्ति प्रभु ने क्षण में दीनी मिरगी निवार ॥
श्याम घटा सी पाप का सारा मेटो न भवतार ॥
महा ममासक्त यह नर जीवन खोता न भोग मंझार ॥
लाख हों मुश्किल चाहे सिर पर भागे सभी हर बार ॥
लख कर दीन दुखी को जग में सदा करो चित्त प्यार ॥
जीवन में तुम कीर्ति कमा कर, हो जावो भव-पार ॥

वीरों की याद

[तर्ज—एक दिल के टुकड़े हजार हुए कोई यहाँ—]

वीरों ने जैन धर्म खातिर हँस-हँस निज जान निसार करी ।
जौहर दिखला कर जनता को सोते से फिर बेदार करी ॥ध्रुव॥

सत्य धर्म की वीर प्रभु ने जो पनपाई मुक्तियों की वेली ।
निज रक्त से कर सिंचन उसका फूला-फला गुलजार करी ॥

भक्त-भावना

[तर्ज —हम को तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो]

दिल मे हमारे अय प्रभो! तेरा ही बस ध्यान हो।
मस्तक झुके तव चरण मे, मुख से तेरा गुणगान हो ॥ध्रुव॥

सुख मे न भूलूं मैं धर्म को, दुःख मे भी न छोड़ूं कदा,
ध्यान अटूट लगा रहे, तव चरणो मे मेरा सदा।
त्याग सभी अभिमान को, तेरा ही अभिमान हो,
दिल मे हमारे अय प्रभो! तेरा ही बस ध्यान हो॥

दीन-दुखी जो मुझे मिले, सेवा मे उनकी लगा रहूं,
कष्ट अनेको झेल लूं, किन्तु उन्हे सुखी करूं।
सेवा-व्रती बनूं सदा, एक यही बस आन हो,
दिल मे हमारे अय प्रभो! तेरा ही बस ध्यान हो॥

अपना पराया भूल कर, पर हित मे जुट जाऊं मैं,
सन्त गुणी जन जब भी मिले, श्रद्धा से शीश झुकाऊं मैं।
सत्य विवेक बने रहे, कर्तव्य का कुछ भान हो,
दिल मे हमारे अय प्रभो! तेरा ही बस ध्यान हो॥

विश्व मे "कीर्ति" हो मेरी, ऐसा मुझे वर दीजिए,
जीवन सफल करलूं प्रभो! ऐसी कृपा कुछ कीजिए।
काटूं कर्म बन्धन तथा, मुक्ति में मेरा स्थान हो
दिल म हमारे अय प्रभो! तेरा ही बस ध्यान हो॥

शान्तिनाथ

[तर्ज—पायल की झनकार ...]

भजो शान्ति दिल धार, जियरवा।
शान्ति शान्ति दातार ॥ ध्रुव ॥

गुण-गण भारी पर उपकारी भव भय भञ्जन हार ॥
रूप है सुन्दर अचला-नन्दन विश्वसेन मल्हार ॥
देखत ही कट जाए बन्धन होवे जय-जयकार ॥
कष्ट पड़े पर जो नर ध्यावे सब दुःख मोचन हार ॥
श्रीशान्ति प्रभु ने क्षण में दीनी मिरगी निवार ॥
श्याम रंग की पाप की धारा मेटी ले अवतार ॥
सच्चा अमोलक यह नर जीवन खोयो न भोग मँझार ॥
लाख हो मुश्किल चाहे सिर पर प्रभु को ध्या हर बार ॥
सब कर दीन-दुःखी की जग में सेवा करो चित धार ॥
जीवन में शुभ कीर्ति कमा कर हो जाओ भव-पार ॥

वीरों की याद

[तर्ज:—एक दिन के ... हमार हुए कोई नहीं—]

वीरों ने जैन धर्म खातिर हँस-हँस निज प्राण निसार करी।
जौहर दिखला कर जनता को शीशे से फिर बेदार करी ॥ध्रुव॥

सत्य धर्म की वीर प्रभु ने जो बर्बाद दुखियों की देखी।
निज रक्त दे कर सिंचन उसका फूला-फला गुलज़ार करी ॥

उपकारी गुरुवर

[तर्ज—मोहन की मुरलिया बाजे यो......]

गुरुवर हैं पर उपकारी म्हां मैं बार २ बलिहारी ।।ध्रु.बा.।।
क्रोध मान मद मान को जीता ममता दूर निवारी ।
सज्जनता है जग-भर में छाया जग मन भारी ।।
गुरुवर की महिमा न्यारी म्हां...मैं बार-बार बलिहारी ।।
देश-देश में घूम के गुरुवर धर्म-ध्वजा लहराई ।
प्रभु वीर की अमृत-वाणी घर-घर में फैलाई ।।
हम आए शरण तिहारी म्हां मैं बार-बार बलिहारी ।।
सादई ग्राम उत्तर-प्रदेश में जन्म आपने पाया ।
श्याम लाल जी नाम आपका जीवन सफल बनाया ।।
हैं भवभय उद्धारण हारी म्हां...मैं बार बार बलिहारी ।।
चरण-शरण में कीर्ति आया है गुरुवर अपनाओ ।
सच्ची शिक्षा देकर गुरुवर भव-जल पार लगाओ ।।
मह मेटा कर्म बीमारी म्हां मैं बार-बार बलिहारी ।।

वीर चरण चित्त लाना

[तर्ज—ओ जीने वाले हँसते-हँसते जीना......]

ऐ प्यारे प्राणी ! वीर चरण चित्त लाना ।।ध्रु.बा.।।
पूर्व पुण्य उदय जब आया
तुम ने हीरा जन्म पाया ।
पापों में न गंवाना ।।

प्रभु से प्रार्थना

[तर्ज—जब तुम ही नहीं अपने दुनिया यह......]

मँझधार में नैया है, प्रभु पार लगा देना।
एक तू ही खिवैया है इसे पार लगा देना ॥प्र.पा.॥
भव सिन्धु यह भारी है असमर्थ हूँ तिरने में।
फिर जीर्ण यह नैया है, प्रभु पार लगा देना ॥
मद मत्सर मोह-माया यह आह लगे पीछे।
हे नाथ! बचा इन से झट पार लगा देना ॥
दुनिया को भुला करके प्रभु तुम को पुकारा है।
अब शरण तुम्हारा है मुझे पार लगा देना ॥३॥
धर्मी हूँ या पापी हूँ मैं दास तुम्हारा हूँ।
अब हाथ पकड़ 'मधु' का इसे पार लगा देना।

गुरुवर के गुण

[तर्ज—आ जाओ तरसते हैं अरमाँ अब तक दुखले......]

गुण गाओ सब मिल गुरुवर के गुरुदेव की महिमा न्यारी है।
उद्धारक गुरु भव्य जीवों के वाणी अमृत सी प्यारी है ॥प्र.पा.॥
प्रति पालक हैं छह काया के त्यागी हैं जो मोह-माया के।
नव वाड़ ब्रह्मचर्य पाले गुरु पञ्च महाव्रत धारी हैं ॥
गुरु कठिन तपस्या करते हैं कर्मों के मल को हरते हैं।
भव जल से पार उतरते हैं, रहती नहीं कर्म बीमारी है ॥

गुरु वाणी सुधा बरसाते हैं, सुन श्रोता जन हर्षाते हैं।
निज जीवन उन्नत बनाते हैं, डाला जग में यश भारी है॥
गुरु श्यामलाल जी प्यारे हैं, जो चमके जैन सितारे हैं॥
दीना के गुरु सहारे हैं, गुरु भव-भय नष्ट हारी हैं।
जो शरण आपकी आया है, उसका सब दुःख मिटाया है।
"यशचन्द्र" ने शीश झुकाया है, चाहे गुरु कृपा तुम्हारी है॥

एक मात्र आधार

[तर्ज—सावन की बरसात तोबतिया पायल की.]

प्रभु नाम दिलदार, मानव एक मात्र आधार ॥ध्रुव॥
लाख चौरासी भटकत भटकत, मिला यह नरतन सार ॥
सुकृत करके सफल करो यह, नर भव का अवतार ॥
चार दिनों की चमक चाँदनी पीछे है अन्धकार ॥
धन वैभव सब अथिर सदा है बिजली सम चमकार ॥
धर्म बिना यह गाफिल प्राणी, होत है भव भव ख्वार ॥
समय मिला जो तुझे सुनहरा, मिले न बारम्बार ॥
मेरा मेरा कहना जिस को, नहीं तेरा, उर धार ॥
दया, अहिंसा विश्व मैत्री से, हो भव सिन्धु पार ॥
"कीर्ति" फैलानी यदि चहुँ दिशि, कर आतम उद्धार ॥

प्रभु से मांग

[तर्ज:—बाँका चाहे बनाके मोर—]
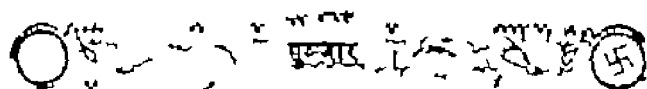
प्रभु जी ! ऐसा दो वरदान ।।ध्रु.।।

दीन दुखी को मैं न सताऊं ।
प्राणी मात्र से प्रीति बढ़ाऊं ।।

हृदय की हो यह तान ।
प्रभु जी ! ऐसा दो वरदान ।।

सत्य-सुपथ पर आगे बढ़ूं मैं ।
अपने प्रण से न विचलित हूं मैं ।।

कर्त्तव्य का कर भान ।
प्रभु जी ! ऐसा दो वरदान ।।

कड़वा बोल कभी ना बोलूं ।
जब बोलूं तब मीठा बोलूं ।।

रहे यही बस ध्यान ।
प्रभु जी ! ऐसा दो वरदान ।।

अन्त समय में धर्म लगा कर ।
तव चरणों में चित्त लगाकर ।।

पाऊं कीर्ति महान् ।
प्रभु जी ! ऐसा दो वरदान ।।

वीर नाम हितकारी

[तर्ज—यह मीठा प्रेम प्याला, कोई पिएगा •]

जप वीर नाम हितकारी। जप वीर नाम हितकारी॥ध्रुव॥

वीर नाम है अति अनमोला। इस बिन व्यर्थ है नर का चोला।
नाम सदा सुखकारी। जप वीर नाम हितकारी॥

वीर नाम जो दिल मे धरते। पाप कर्म सबके सब टरते।
सुखी बनें नर नारी। जप वीर नाम हितकारी॥

अर्जुन माली था हत्यारा। वीर नाम ने पल में तारा।
हुआ मोक्ष अधिकारी। जप वीर नाम हितकारी॥

सती चन्दना का कष्ट निवारा। आया शरण जो, पार उतारा।
छाई महिमा भारी। जप वीर नाम हितकारी॥

वीर प्रभु को जिसने ध्याया। नर तन का है लाभ उठाया।
ना रही कर्म बीमारी। जप वीर नाम हितकारी॥

वीर प्रभु का नाम सुमर ले। भव सागर से पार उतर ले।
छाए "कीर्ति" भारी। जप वीर नाम हितकारी॥

जा
ग
र
ण
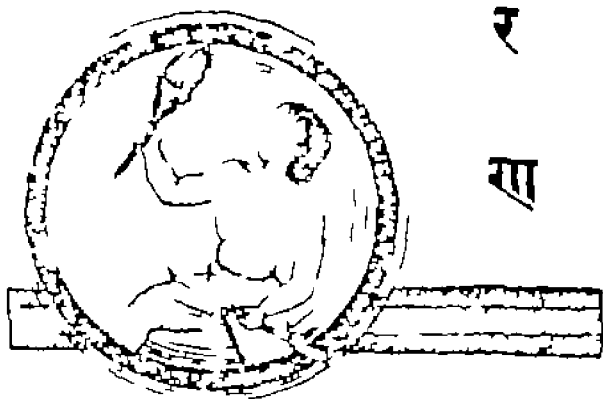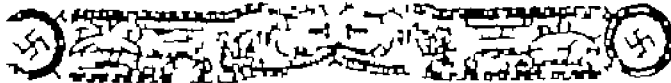
भोले मन से ?

[तर्ज—मन डोले मेरा तन डोले मेरे ......]

मन भोले मेरे मन भोले! जरा कुछ तो करा विचार रे
क्यों आया इस जग में तू ॥ध्रु.॥

मधुर मधुर सपनों में खोया तूने जीवन प्यारा
नरतन रतन अमूल्य को तूने कौड़ी बदले हारा।
डगमग डोले डगमग डोले यह नाव बीच मझधार रे
क्यों आया इस जग में तू ॥

कदम-कदम पर माया-मोह ने तुझ पर घेरा डाला
तज करके कर्तव्य विषम भोगों में जीवन गाला।
क्यों नहीं तोले क्या नहीं तोले कर्तव्य बड़ा या संसार रे
क्यों आया इस जग में तू ॥

जाग अरे मोह की निद्रा से जीवन उच्च बनाले
बने जहाँ तक इस जीवन से सच्चा लाभ उठाले।
जग में फैले जग में फैले तेरा 'यश' विस्तार रे
क्यों आया इस जग में तू ॥

———
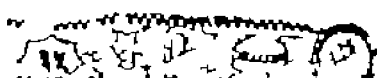
भगवान क्यों भूला ?

[तर्ज —छोड गए बालम, मुझे हाय अकेला छोड']

कैसे हुआ वे भान ? कैसे अरे वे भान हुआ ?
क्यो भूला भगवान ? क्यो अरे भगवान भूला ।।ध्रुव।।
पाया है यह नर तन तूने, इस को सफल बनाय,
जग यह जजाल है प्यारे, क्यो इस मे भरमाय ?
जाग अरे नादान ! कैसे अरे वे भान हुआ ?
काया-माया अथिर सभी हैं चन्द दिनो का फेर,
पानी के बुद बुद सम इन को, मिटते लगे न देर।
छोड दे अभिमान, कैसे अरे वे भान हुआ ?
दीन दुखी का दु ख मिटाकर, कर ले पर उपकार,
मानव जीवन फिर नही मिलना, कर ले नैया पार।
कर जीवन उत्थान, कैसे अरे वे भान हुआ ?
धर्म ध्यान जो करले प्यारे, जग मे 'कीर्ति'' छाय,
जन्म-मरण का दु ख मिटे और, अजर-अमर हो जाय।
गा प्रभु का गुण गान, कैसे अरे वे भान हुआ ?

दुनियाँ को जगा दे

[तर्ज—मुहब्बत के मारो का हाल ये दुनियां म----]
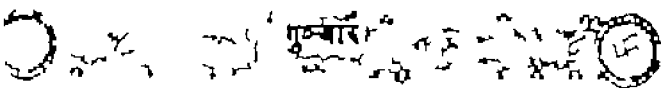
उठ वीर नौजवाँ ! जाग तू दुनियाँ को जगा दे ।
पाप जमाने से मिटादे तू धर्म जग में फैला दे ।।ध्रुव।।

कुछ जग में धर्म फैला न सके ।
और पाप से चित्त हटा न सके ।
अनमोल जन्म यह बीत गया ।
कुछ इससे लाभ उठा न सके ।।उठ०।।

दुनियाँ यह फानी जानी है ।
क्यों इस में चित्त फँसाया है ?
प्रभु नाम का सुमरण कर मूरख ।
जिस से यह नर तन पाया है ।।उठ०।।

कर धर्म पाप तज कर भाविक !
आदर्श बना ले निज जीवन ।
कुछ 'कीर्ति' कमा जग में प्यारे ।
जिससे होवे तन-मन पावन ।।उठ०।।

प्रभु वीर ध्याले

[तज —रिमझिम वरसे वादरवा, मस्त घटाएँ" "']

जग ! जग ! भोले गाफलवा ! जीवन वीता जाए,
प्रभु वीर ध्याले, ध्याले , प्रभु वीर ध्याले ॥ध्रुव॥

तेरा जो यह अन्तर चेतन सोया है।
समय वहुत सा तूने व्यर्थ ही खोया है॥

देश, धर्म की सेवा मे, तन, मन, धन, को अपने,
अव तो लगाले, ध्याले, प्रभु वीर ध्याले॥

स्वारथ का ससार जगत यह फानी है।
जिस माया पर फूला, आनी-जानी है॥

जीवन उच्च वनाने को, वाणी जिनेश्वर की तू-
अव अपनाले, ध्याले, प्रभु वीर ध्याले॥

तेरे अन्दर आतम वल वह छाया है।
पता न देवो तक ने जिसका पाया है।

आतम वल प्रगटाने को, तजकर दुष्कर्म जगत मे-
धर्म कमाले, ध्याले, प्रभु वीर ध्याले॥

नाम प्रभु का कलिमल सारा हरता है।
नाम सहारे भव सिन्धु नर तरता है॥

मन का द्वैत मिटा करके, "कीर्ति" कमा के जग मे-
अमर पद पाले, ध्याले, प्रभु वीर ध्याले॥

पर्यूषण जगाने आए हैं

[तर्ज—मस्ती-भरी हारे-हारे [illegible] ——]

पर्वराज पर्यूषण प्यारे, हमें जगाने आए हैं।
आत्म शान्ति का मधुर सन्देशा हमें सुनाने आए हैं ।।ध्रु०।।

अज्ञान अन्धकार फैला जीवन में जिससे घोर अन्धेरा है
क्रोध मान मद राग द्वेष ने यहाँ लगाया डेरा है।
कर्म-बन्धन की जन्जीरों से हमें छुड़ाने आए हैं।
आत्म-शान्ति का मधुर सन्देशा हमें सुनाने आए हैं ।।

मिले ज्ञान जिससे दुखिया की सुनकर करुण पुकार हम।
मिल जाय जिसके पानी से हिम की तरी कुम्हाव हम।
पर हित अर्पण सर्वस्व कर बस यही बताने आए हैं।
आत्म-शान्ति का मधुर सन्देशा हमें सुनाने आए हैं ।।

जीवन का साफल्य यही है मम-ध्यान उपकार कर।
पर्यूषण का सार यही है निज आतम उद्धार करें।
'यश' सौरभ फैले दिशि दिशि में यही जताने आए हैं।
आत्म शान्ति का मधुर सन्देशा हमें सुनाने आए हैं ।।

मोक्ष-पद पाना

[तर्ज—यही पे निगाह यही पे निशाना, जीने दो ॰]

नर तन पाकर, प्रभु गुण गाना ।
जीवन अमूल्य है, सफल बनाना ।।ध्रुव।।

जीवन मे तेरे दानवता क्यो है छाई ?
मानवता है, तूने काहे बिसराई ?

तज कर दानवता, मानवता अपनाना ।
नर तन पाकर प्रभु गुण गाना ।।

मारग है लम्बा, कठिन तेरी मंजिल ।
पर, मोह निद्रा मे, सोया है तू गाफिल ।

कर्तव्य पथ पर कदम को तू बढाना ।
नर तन पाकर प्रभु गुण गाना ।।

धर्म की पूंजी, यहाँ से कमा कर ।
जगत मे 'यश'' सौरभ तू फैला कर ।

अजर अमर बन, मोक्ष पद पाना ।
नर तन पाकर प्रभु गुण गाना ।।
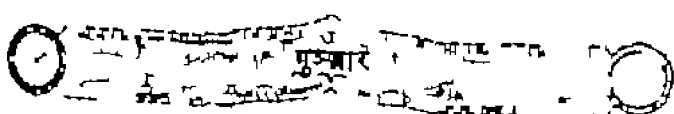
अजर अमर पद पाले

[तर्ज —भामा का विस्तर होवे ? एक छोत का·········]

तू जाग-जाग ओ प्राणी रे यह जीवन सफल बना ले ॥ध्रु.॥

क्यों गाफिल हो कर सोता ? अनमोल समय क्यों खोता ?
जो सुता वह ही रोता रे—तू अपना आप जगा ले ॥

यह तन धन जन नश्वर है संसार ही क्षण-भंगुर है।
धर्म ही एक अमर है रे— तू सत्य पन्थ अपना लें ॥

शुभ नेक कमाई कर ले जीवन में अमृत भर ले।
पापों की राह से टर ले रे—तू निज आतम विकसा ले ॥

नरतन का लाभ उठा कर, जीवन को उच्च बना कर।
'पद्म' सौरभ को फैला कर रे—तू अजर अमर पद पा ले ॥

होजा अजर अमर

[तर्ज —चौद बाबुल का घर मोहे पी के नगर आज·······]

पाया नरतन मधुर ! क्यों हुआ बेखबर ? जाग कर तो जरा ॥ध्रु.॥

जग में आ कर कभी न किए शुभ करम !
विषय भोगों में तूने गँवाया जनम !
अब तो प्रभु को सुमर आतमा शुद्ध कर जाग उठ तो जरा ॥
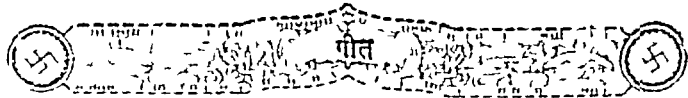
फानी वैभव, न यह साथ जाए तेरे।
वस धर्म-ध्यान ही, काम आए तेरे।
कर ले धर्म अगर, पाए मुक्ति नगर, जाग उठ तो जरा ॥

वन के आदर्श, तू कर ले जीवन सफल।
"कीर्ति" को कमा, जिस से होवे विमल।
पार जग से उतर, होजा अजर अमर, जाग उठ तो जरा ॥

जमाने को जगादे

[तर्ज —यह दुनियां है, यहाँ दिल का लगाना किसको]

अरे मानव! जरा उठ तो, जमाने को जगा दे तू।
अहिंसा धर्म का डण्का, जमाने मे वजा दे तू ॥ध्रुव॥

अगर पाया जनम नर का, तो कुछ इस को सफल करले।
दुखी और दीन की सेवा मे, तन-मन को जुटा दे तू॥

यहाँ दो दिन वहारें हैं, न फंस इन मे कभी मूरख!
हटा कर जग से जीवन को, प्रभु चरणो लगा दे तू॥

घृणा और द्वेष दावानल, धंधकता है यहाँ निश दिन।
परस्पर प्रेम की गगा, वहा करके बुझा दे तू॥

करो शुभ कर्म तुम ऐसे, कि हो पूजा जमाने मे।
सदा "यश" की सुगन्धी को, जहा भर मे फैला दे तू॥

दुनियाँ है यह फानी, दिन चार की जिन्दगानी।
वीरान वह जगह है, गुलजार ये जहाँ॥
दीनों का भला कर तू, उपकार सदा कर तू।
जिस जा पे प्रेम होगा, सुख सम्पति तहाँ॥
"यश" जग में फैलाना, 'जय-वीर' तराना।
सुनकर जिसे जमाना, हो जाए शादमा॥

चातुर्मास आया

[तर्ज —ऐ दिल मुझे ऐसी जगह ले चल जहां]

आ गया चौमास यह, हमको जगाने के लिए।
आत्म-शुद्धि का प्रखर, मार्ग बताने के लिए॥ध्रुव॥
आ गया अज्ञान तम को, दूर करने को तथा।
ज्ञान और आचरण ज्योति, जगमगाने के लिए॥
जिस तरह चौमास में, झडियाँ लगे बरसात की।
आगया ऐसे ही, तप झडियाँ लगाने के लिए॥
शास्त्र श्रवण, गुरुदेव दर्शन, नित्य की चर्या बने।
आ रहा है, पाप-कलिमल को नशाने के लिए॥
करके जिन वाणी श्रवण, हम शुद्ध और निर्मल बने।
"यश मुनि" यह आ रहा, जीवन बनाने के लिए॥
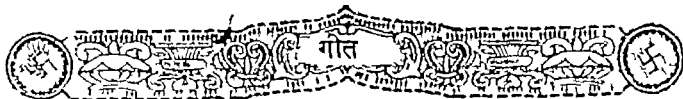
आलस्य, कायरता त्यागो

[तर्ज —तारे भरियां दा अम्बर प्यारा, वीर']

उठो वीरो जरा तुम जागो ! आलस्य, कायरता त्यागो ।
डूबती नैया को पार लगा दो,देश भारत की आन जगा दो ।।ध्रुव।।

कैसा फैला है पाप घनेरा, चहुँ ओर है छाया अंधेरा ।
दीप धर्म का शीघ्र दिखाना,जन-जीवन को ऊंचा उठाना ।।

लाखो दीन-अनाथ वेचारे, फिरे गलियो मे मारे-मारे ।
जिन्हे भोजन के पड रहे लाले,दशा बिगडी है कौन सभाले ।।

झेले कडवे वचन दिन रातें, कोई पूछे न जिनकी बाते ।
ऐसी बिधवाएं भरती आहे, कैसे भारत तरक्की पाए ?

पापाचार है फैला भारी, घर-घर है कलह-युद्ध जारी ।
कोई नही रहा रखवारी, क्यो न डूबे यह नैया हमारी ।।

यदि दश है ऊँचा उठाना ? दुख दर्द सभी का मिटाना ।
दुआए ले कदम वढा दो,"यश"सौरभ से जग महका दो ।।

— o —

पर्वराज पर्यूषण

[तर्ज:—रेशमी सलवार कुर्ता जाली का......]
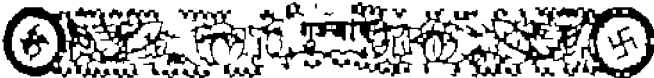
पर्वराज पर्यूषण प्यारे आए हैं।
मोह नींद से हमें जगाने आए हैं ॥ध्रुव॥

शुभ पुण्य कमाई करके हमने जो नरतन पाया।
कुछ इससे लाभ उठाया या यों ही व्यर्थ गँवाया?
जताने आए हैं ॥ मोह नींद से...॥

मन वचन और इस तन से क्या हमने करी कमाई?
उपकार किया है पर का या करते रहे बुराई?
सिखाने आए हैं ॥ मोह नींद से...॥

क्षमा सत्य ब्रह्मचर्य सन्तोष शान्ति क्या धारे?
मोह,मान माया और ममता अन्तर-शत्रु क्या मारे?
बताने आए हैं ॥ मोह नींद से ॥

बनकर फूला सा कितना 'मधु' सौरभ है फैलाया?
बन सूर्य जगत को कितना सन्मार्ग है दिखलाया?
सुनाने आए हैं ॥ मोह नींद से...॥

—।०।—
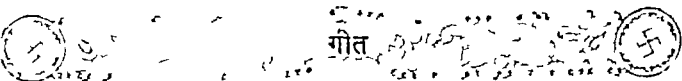
मानव के प्रति

[तर्ज —ओ लूटने वाले जादूगर अब मंने तुझे']

मानव हो करके मानव तुम, कुछ मानवता से प्यार करो।
जीवन जो अमूल्य मिला तुम को, पापो मे मत ना ख्वार करो॥ध्रुव॥
यह माया है आनी जानी, जिस के ऊपर गर्वाया है।
पापो मे गलते जीवन का, कुछ धर्म कमा उद्धार करो॥
सुत, मात, पिता परिवार सभी, मतलव के सगी साथी हैं।
असहाय, दुखी और दीनो का, वन सके सदा उपकार करो॥
मद, लोभ, मोह शत्रु तेरे, तुझ से यह धर्म छुडा देंगे।
सन्तोष, शान्ति के शस्त्रो से, झट पट इनका सहार करो॥
जीवन नौका मंझधार पडी, विन धर्म न कोई खिवैया है।
फैला कर "यश" सौरभ जग मे, जीवन नैया को पार करो॥

उपकार करो

[तर्ज —या इलाही मिट न जाए दर्दे दिल]

करना है, उपकार दुनियां मे करो।
पाप मार्ग मे कदम रखते डरो॥ध्रुव॥
चाहते सुख भोग, दुनियावी अगर ?
दीन-दुखियो की, सदा सेवा करो॥
पाप धाने की, यदि है कामना ?
दो घडी प्रभु, नाम का सुमरण करो॥
"कीर्ति" ससार मे यदि चाहिए ?
धर्म वेदी पर, सदा हस हंस मरो॥

क्या कमाया ?

[तर्ज —ऐ दिल मुझे बता दे तू किस पे आ गया ……]
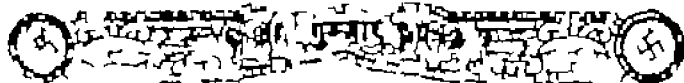
प्यारे ज़रा विचारो ? दुनिया में क्या कमाया ?
कुछ काम नेक कीने ? या वक्त ही गँवाया ॥ध्रु०॥

दीनों व दुखियों की सेवा कभी बजाई ?
भटके हुए दिलों की कीनी क्या रहनुमाई ?
गिरते हुए किसी को तूने कभी उठाया ?
कुछ काम नेक कीने ? या वक्त ही गँवाया ?

सन्तान वीर की हो क्या वीरता दिखाई ?
तज कर बुराइयों को कीनी कभी भलाई ?
जिनमत के ज्ञान दीपक सत्पथ कभी बताया ?
कुछ काम नेक कीने ? या वक्त ही गँवाया ?

मोह काम क्रोध माया और लोभ कितना छोड़ा ?
तज वासना प्रभु से कितना है प्रेम जोड़ा ?
कितना है उच्च जीवन संसार में बनाया ?
कुछ काम नेक कीने ? या वक्त ही गँवाया ?

बन कर गुलाब जग में कितनी महक फैलाई ?
क्या धर्म कार्य द्वारा कुछ 'कीर्ति' कमाई ?
कितना भरे घड़ा था ? पापों से रिक्त हुआ या ?
कुछ काम नेक कीने ? या वक्त ही गँवाया ?

चेतावनी

[तर्ज.—मेरा यह दिल है आवारा, न जाने किस पे ......]

मिला है नर रतन तुमको, नही इस को लुटा जाना।
लगा कर धर्म में तन-मन, सफल इसको बना जाना ॥ध्रुव॥
भ्रमित हो कर मरुस्थल में, हरिण जल देखकर दौडे।
भटक कर प्राण दे देता, न तुम ऐसे भुला जाना ॥
छोड वैभव जगत का सब, आखिर होना रवाना है।
नही साथी कोई तेरा, न तू इस में लुभा जाना ॥
सुखी है तो स्वय ही तू, दुखी है तो स्वय ही तू।
भंवर मे डोलती नैया, न भव सिन्धु डुबा जाना ॥
मनुज तन पाके जो तूने, अशुभ या शुभ कर्म कीने।
वही तो साथ जाएंगे, नही कुछ और सग जाना ॥
जो चाहे "कीर्ति" जग मे, सदा कर काम नेकी के।
यही है सार दुनियां मे, प्रभु का नाम ध्या जाना ॥

गाफिल से !

[तर्ज—ओ…बड़े बन-बन ढूंढे तेरी…]

ओ…यह नर तन पाया जो तून
कि बार-बार नहीं मिलना । ओ गाफिला ।।

जो आया जगत में प्राणी
कि एक दिन उसे मरना । ओ गाफिला ।।

ओ…यह जगत सराए फानी
कि कुछ नहीं संग जाएगा । ओ गाफिला ।।

तू जैसा करेगा प्यारे
कि वैसा ही फल पाएगा । ओ गाफिला ।।

ओ…कुछ धर्म कमाई करले
कि जिस से सुख पाएगा । ओ गाफिला ।।

सब तोड़ करम की बेड़ी
कि बन जा तू परमात्मा । ओ गाफिला ।।

ओ…कर दीन-दुखी की सेवा
जो होना चाहे भव पार तू । ओ गाफिला ।।

मत' सौरभ फंसा भ्रम में
जो चाहे निज उद्धार तू । ओ गाफिला ।।
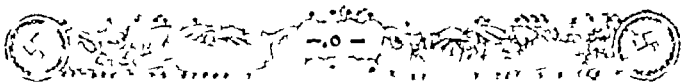
जीवन सफल बना

[तर्ज —घूँघट के पट खोल रे, तोहे राम]

जीवन सफल बनाय रे, जो तू सुख चाहे ॥ध्रुव॥

भटकन-भटकन लाख चौरासी,
लियो है नर तन पाय रे ॥

चिन्तामणि सम पाया नरतन,
ले कुछ धर्म कमाय रे ॥

जो धन-वैभव पाया पुण्य से,
सुकृत में दे लगाय रे ॥

तज कर्तव्य पीयूष बावरे,
विषय-जहर क्यों खाय रे ॥

दीन दुखी की सेवा करके,
जीवन उच्च बनाय रे ॥

आतम ज्योति जगा घट अन्दर,
अजर अमर हो जाय रे ॥

यश"सौरभ फैला कर जग में,
"कीर्ति"चहुँ दिशि पाय रे ॥
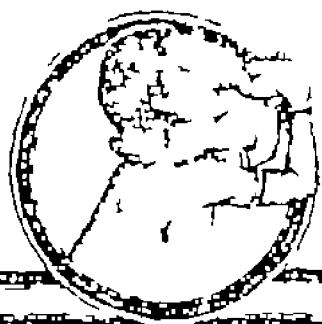
— o.—

उद्बोधन

प्रभु गीत तू गा लेना

[तर्ज —बचपन की मुहब्बत को दिल से न जुदा…]

ओ मानव ! इस जग में कुछ धर्म कमा लेना ।
यह मानव तन पाया कुछ लाभ उठा लेना ॥ध्रुव॥

मोह नींद में क्यों गाफिल ! बेहोश हो सोता है ?
सोने-सा समय अपना सोने में क्यों खोता है ?
तू ज्ञान की ज्योति से अन्तर को जगा लेना ॥

अस्थिर बचपन तेरा और झूठी जवानी है ।
धन-दौलत और वैभव सपने सी कहानी है ॥
प्रभु नाम ही शाश्वत है, प्रभु गीत तू गा लेना ॥

यहाँ आए बहुत राजा धनवान व सेनानी ।
पर किसकी रही कायम संसार में निशानी ?
नर तन से बने जो भी वह शीघ्र बना लेना ॥

मोह, लोभ काम माया चहुँ ओर से घेरे हैं ।
बच कर रहना इन से ये पूरे लुटेरे हैं ॥
तू सुकृत-नेकी की पूँजी न लुटा लेना ॥

सुख चाहे अगर जग में कुछ कीर्ति कमा प्यारे ।
सेवा में दुखियों की जीवन को लगा प्यारे ॥
ले धर्म का शरणा तू मुक्ति पद पा लेना ॥
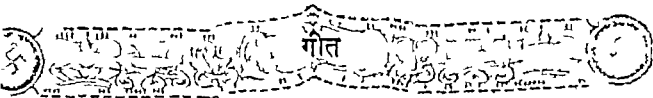
बन इस जग को वरदान

[तर्ज —तेरे सर पे टोपी लाल, हाथ में रेशम का ']

अरे सुन ले तू नादान ! यहाँ कर जीवन का उत्थान,
अगर सुख है पाना ?
तू बन सच्चा इन्सान, कि जिस से हो आतम कल्याण ,
अगर सुख है पाना ॥ध्रुव ॥

पुण्य उदय से तूने, नर जन्म पाया है, मिले जो न वार-बार,
जग झंझटो मे लेकिन, इसको गंवाया है, कहते हैं शास्त्रकार ।
छोड-छोड अज्ञान, प्राप्त कर ले तू सम्यग् ज्ञान ,
अगर सुख है पाना ॥

जिनको कहे तू मेरा, कोई भी नही है तेरा, बात यह जान ले ,
धर्म सुखदाई है, धर्म ही सहाई है, तत्त्व यह पहिचान ले ।
तू करके धर्म और ध्यान, प्राप्त कर जग पूजा का स्थान,
अगर सुख है पाना ॥

दीन दुखी को पाकर, सर्वस्व कर न्योछावर, दु ख सब मिटा दे तू,
बन अबान्धव प्यारा, गिरतो को दे सहारा, ऊँचा उठादे तू ।
रोनो की बन मुस्कान, और बन इस जग को वरदान ,
अगर सुख है पाना ॥

जीवन आदर्श बना कर,"यश"सौरभ फैला कर,फूल सा महकना,
कर्म कटक को चूर, करके अंधेरा दूर, सूर्य सा चमकना ।
तू बन करके भगवान, प्राप्त कर लेना पद निर्वाण ,
अगर सुख है पाना ॥

जीवन सुधार ले

[तर्ज—ऊँची-ऊँची दुनियाँ की दीवारें—]

भव-सिन्धु से नैया अपनी पार तू उतार ले।
ओ बन्देया! जीवन तू अपना सुधार ले ॥ध्रुव॥

नरतन पाकर व्यर्थ गँवा कर, फिर काहे तू रोता है?
जाग! जाग! काहे प्राणी! मोह नींद सोता है?

पाकर, मनुज—भव का सार ले
ओ बन्देया! जीवन तू अपना सुधार ले ॥

काया माया बादल छाया इस में क्यों तू भरमाया?
फँसा जो जग में प्राणी उसको रोता ही पाया!

इन के चंगुल से कर उद्धार ले
ओ बन्देया! जीवन तू अपना सुधार ले ॥

दुर्गुण दूर कर के जग में तू सद्‌गुण को अपना लेना
बन कर आदर्श जहाँ में पूजा तू पा लेना।

विषयों से मन को अपने टार ले
ओ बन्देया! जीवन तू अपना सुधार ले ॥

दीन-दुखी जो पाए उनकी सेवा में लग जाना तू
'मधु' सौरभ फैला कर अमर पद पाना तू।

करके धर्म तू धिल—धार ले
ओ बन्देया! जीवन तू अपना सुधार ले ॥

धर्म करो सुबह शाम

[तर्ज —जादूगर सैयां, छोड़ो मोरी बहियां]

नरतन पा कर, प्रभु गुण गा कर—
नेकी के कर लो काम, जो सुख पाना है ?

पापों से हट कर, बदियों को तज कर—
धर्म करो सुबह शाम, जो सुख पाना है ॥ध्रुव॥

दूर है मंजिल, कदम बढ़ा चल, रुक न कहीं तू जाना रे।
जग के आकर्षण में फंस कर, जन्म न अपना गंवाना रे॥
कर तू कर्म निष्काम, जो सुख पाना है ?

दुनिया है फानी, गम कहानी, क्यों इस में तू लुभाय रे।
जीवन यह क्षण-भंगुर तेरा, इस को सफल बनाय रे॥
पा जग में शुभ नाम, जो सुख पाना है ?

कर ले तू सेवा, पार हो खेवा, जीवन का उत्थान कर।
"यश" सौरभ फैला कर जग में, निज आतम कल्याण कर॥
पा ले तू मुक्ति-धाम, जो सुख पाना है ?

लगाले वीर से लगन

[तर्ज —यही अभिलाषा करते हम तुम्हें वन्दन——]

मिला किस्मत से यह नरतन बनाले—
जीवन का पावन चमन प्यारे सजन!
फँसकर मत माया में निज मन लुभा कर—
पावे तू भगवान्, लगन प्यारे सजन ॥ध्रु.॥

जाग रे गाफिल! दुनियाँ है फानी
सपने सी जग की राम कहानी।
लगा कर धर्म में तन-मन करो उपकार—
तुम निस दिन लगन प्यारे सजन ॥

भाग्य जगे तो नर भव मिला है,
भोगों में किन्तु जीवन खपा है।
अर क्यों खोता जीवन धन! लगाले—
वीर से लगन लगन प्यारे सजन ॥

पाया है जग में 'कीर्ति' कमाले
जीवन अपना सफल बनाले।
बना ऐसा अपना जीवन करे जिससे—
तुमको सुमन लगन प्यारे सजन ॥

मुक्ति का द्वार लो

[तर्ज —छुप-छुप खडे हो, जरूर कोई बात है]

डगमग डोलती नाव को उबार लो।
जीवन सुधार लो जी, जीवन सुधार लो ॥ध्रुव॥

अनमोल नरतन, तुम ने यह पाया है,
फंस मोह जाल मे, क्या इस को गंवाया है ?
पूंजी लुटी जाय, शीघ्र इस को सभार लो,
जीवन सुधार लो जी, जीवन सुधार लो ॥

मात, पिता, भाई, बन्धु, जिन्हे कहे मेरा है,
स्वार्थ के साथी सभी, कोई भी न तेरा है।
केवल धर्म साथी, मन मे यह धार लो,
जीवन सुधार लो जी, जीवन सुधार लो ॥

"कीर्ति" फैलानी है तो, प्रभु का भजन कर,
उपकार कर तथा, दुनियाँ का दुख हर।
काट के कर्म फन्द, मुक्ति का द्वार लो,
जीवन सुधार लो जी, जीवन सुधार लो ॥

कर्तव्य पथ अपनाओ

[तर्ज—बन जाता नहीं नैन मिला के —]

जीवन जीता जाए, सफल बनाना।
प्यारे! दुनियाँ से जाना ॥ध्रु.॥

आए संसार में तो धर्म में चित लाना
पापों से जीवन अपना दूर हटाते जाना।
सत्य दया निर्मल मन में बसाना
प्यारे! दुनियाँ से जाना ॥

जीवन दिन चार तेरा दुनियाँ यह फानी है
झूठे कुटुम्बी जन झूठी जवानी है।
फंस इनमें प्यारे! प्रभु न भुलाना
प्यारे! दुनियाँ से जाना ॥

कर्तव्य-पथ को मित्रो! शीघ्र ही अपनाओ
चाहे तूफान आएँ सिर पर न घबराओ।
यश सौरभ से जग महकाना
प्यारे! दुनियाँ से जाना ॥
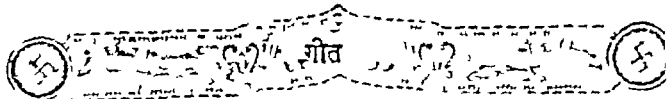
लाभ उठाले

[तर्ज —कौन परदेशी मेरा दिल ले गया]

आया दुनियां मे, कुछ नेकी कमा ले ।
इस नरतन से, तू लाभ उठा ले ॥ध्रुव॥

मोह नींद मे क्यो तू सोया ?
समय अनमोल काहे विषयों मे खोया ?

सुन गुरु वाणी, निज को तू जगा ले ।
इस नरतन से, तू लाभ उठा ले ॥

मात, पिता, भ्राता, सुत नारी,
स्वार्थ की है यह दुनियादारी ।

जग झंझटो से, चित्त को तू हटा ले ।
इस नरतन से तू, लाभ उठा ले ॥

दीन-दुखी की कर ले सेवा,
करना जो चाहे पार अपना तू खेवा ।

पर उपकार मे तू, मन लगा ले ।
इस नरतन से तू, लाभ उठा ले ॥

धर्म-ध्यान और जप-तप कर के,
क्रोध, मान, माया, लोभ, पापो से तू टर के ।
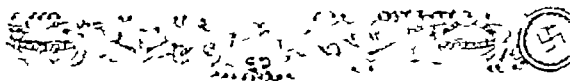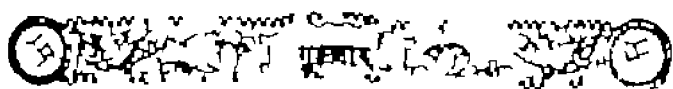
फैला "कीर्ति"व, शिव पद तू पा ले ।
इस नरतन से तू, लाभ उठा ले ॥

अपना धर्म निभाना

[तर्ज —भारत वालो ! भूल न जाना अमर शहीदो]

गाफिल बन्दे ! सीख जरा तू, सत्य धर्म पर शीश कटाना ॥ध्रुव॥
वीर प्रभू का वचन यही है, जीवन सफल बनाना।
जान भले ही जाए, लेकिन अपना धर्म निभाना ॥सीख०॥
गुणी जनो का आदर करना, पापो से नित डरना।
दीन दुखी जो तुमको पाएं, तन-मन से सेवा करना ॥सीख०॥
दुनियां एक मुसाफिर खाना, इसमे नही लुभाना।
छोड जगत के झंझट प्यारे ! प्रभु मे चित्त लगाना ॥सीख०॥
जिसमे होवे सुयश तुम्हारा, ऐसे कर्म कमाना।
जग का बन आदर्श, विश्व मे,"यश" सौरभ फैलाना ॥सीख०॥

अन्तर जीवन शोध

[तर्ज —राग प्रभाती]

मना रे, अन्तर जीवन शोध ॥ध्रुव॥
जीवन शोधन बिन नही पावत,
निज आतम का बोध ॥
मद, मत्सर, मोह, मान अरु माया,
जारत तुझ को क्रोध ॥

पर पदार्थ पुद्गल हित मनको
तृष्णा गति—अवरोध ॥
आगम—विभाजन धर्म-रूप का
करत न काहे विरोध ॥
चहत 'कीर्ति' शिव सुख पायो
लहि-लहि आतम-बोध ॥

सच्चा उपदेश

[तर्ज: —जो दूर जाने वाले वापस न लाये…]

मुक्ति के पथ पे मानव कदम बढ़ाना चल तू ।
बहती है प्रेम गङ्गा गोते लगाना चल तू ॥ध्रु०॥

बन वीर का पुजारी कर दूर मायाचारी ।
नरतन रतन मिला है, नेकी कमाना चल तू ॥

नाती सगाती प्यारे स्वारथ के मीत सारे ।
फानी जहाँ से अपने दिल को हटाना चल तू ॥

गफलत में सो रहे हैं बरबाद हो रहे हैं ।
लेकर बिगुल उन्नति सब को जगाता चल तू ॥

दीनों के दुःख मिटाना जीवन सफल बनाना ।
सुगन्ध 'भग' धर्म की जग में फैलाता चल तू ॥

युवकों से

[तर्ज —दुनियां बदल रही है आंसू बहाने ""]

ऐ वीर नौजवानो ! आगे कदम बढ़ा दो ।
सच्चे धर्म अपने, संसार में फैला दो ॥ध्रुव॥
करना दुखी की सेवा, हो जाए पार खेवा ।
कर्त्तव्य जो तुम्हारा, पूरा वह कर दिखा दो ॥
जीवन वीरान जो है, अपनी ही गलतियों से ।
सब खामियाँ मिटा कर, सरसब्ज तुम बना दो ॥
रणक्षेत्र में जीवन के, कायर कभी न बनना ।
इन कर्म शत्रुओं को, जड़ से ही तुम मिटा दो ॥
पापों के काले बादल, सब ओर छा रहे जो ।
सत्य, अहिंसा की तुम, वायु चला उड़ा दो ॥
"यश" जग में हो तुम्हारा, ऐसे कर्म कमाना ।
'जयवीर' का तराना, घर-घर में तुम सुना दो ॥

जैसी करनी वैसी भरनी

[तर्ज —जग याद में जल कर देख लिया, अब आग]

जो कर्म करेगा ऐ प्राणी ! वैसा ही फल तू पाएगा ।
बोएगा पेड़ बबूल अगर, तो आम कहाँ से खाएगा ॥ध्रुव॥
सुख दुख का मिलना ऐ प्राणी ! कर्मानुसार ही होना है ।
परिणाम बदी का सदा बुरा, नेकी से सुख तू पाएगा ॥
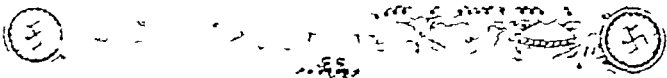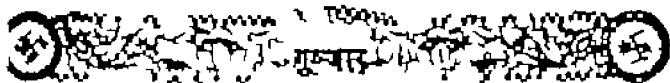
बोलोगे स्तुतियाँ या गाली जाय गुम्बद में जा करके।
वैसा ही प्रतिध्वनित होकर गुम्बद भी तुम्हें सुनाएगा॥
जोड़ोगे हाथ यदि शीश झुका या घूंसा तान दिखाओगे।
वैसा ही दर्पण बिम्ब भी झट तुमको सम्मुख दिखलाएगा॥
इस लिए बना जीवन ऊँचा जग में यश सौरभ फैला कर।
जो धर्म करेगा वह प्राणी बस सचमुच अमर हो जाएगा॥

भलाई कर

[तर्ज़ :—तू प्यार का सागर है तेरी एक बूंद ....]

संसार में आकर के अरे ! कुछ नेक कमाई कर।
नरतन का लाभ उठा अरे ! जीवन में भलाई कर॥ध्रु॥

मोह नींद में क्या है सोता जाग अरे तू जाग ?
क्या फंसता है इन विषयों में गाफिल इन से भाग ?

यह सब संसार है स्वारथ का न तू यों लोक हँसाई कर॥

सूना है मन मन्दिर कब से इसको स्वच्छ बना
आत्म-तत्व को समझ बावरे ! अन्तर-ज्योति जगा॥

तू ज्ञान की झाड़ू से अपने जीवन की सफाई कर॥

जग से प्रीति हटा कर प्यारे, प्रभु चरण चित ला
कर आत्म कल्याण चमन में यश सौरभ फैला।

बन कर आदर्श यहाँ तू जग की राहनुमाई कर॥

गाफिल से ?

[तर्ज —तेरे कूचे में अरमानों की दुनियां ले के]

अरे उठ गाफिला जल्दी सफर सामां बना लेना ।
अगत के वास्ते पूंजी, धर्म की भी कमा लेना॥अरे०॥
न इस ममार चक्कर मे, कभी भी भूल कर फंसना ।
न हो मशगूल ऐशों मे, धर्म सच्चा भुला देना ॥

तेरे साथी गए आगे, तू पीछे क्यों पड़ा गाफिल ?
नही तू हारना हिम्मत, कदम आगे बढ़ा देना ॥
जवानी है नहीं कायम, यह दो दिन की बहार है ।
यह बहता पानी दरिया का, नफा इससे उठा लेना ॥

अगर मुफलिस नजर आए, तुझे कोई जमाने मे ।
खुले दिल और हाथो से, तू धन उन पे लुटा देना ॥
धर्म और देश की खातिर,तू बनकर सच्चे परवाना ।
सदा "यशचन्द्र" प्राणों तक,की भी बाजी लगा देना ॥
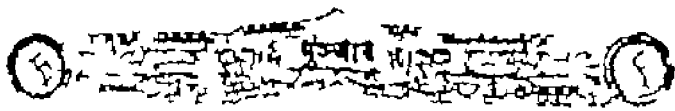
गँवा नहीं देना

[तर्ज—भुला नहीं देना जी भुला नहीं देना ज़माना—]

गँवा नहीं देना जी गँवा नहीं देना।
यह नरतन अमूल्य है, गँवा नहीं देना ॥ध्रु०॥

पुण्य उदय जब तेरा है आया
तूने मानव तन को पाया।
विषयों में इसको फँसा नहीं देना।
यह नरतन अमूल्य है गँवा नहीं देना ॥

नारी संपत्ती सुत बन्धु प्यारे
स्वार्थ के सगे हैं मीत सारे।
फँस इन में कर्तव्य भुला नहीं देना।
यह नरतन अमूल्य है गँवा नहीं देना ॥

मोह मान माया डाले हैं डेरे
पीछे लगे हैं तेरे लुटेरे।
जीवन की पूँजी लुटा नहीं देना।
यह नरतन अमूल्य है गँवा नहीं देना ॥

नीति राह धर्म कमाले
जीवन अपना उच्च बनाले।
प्रभु भक्ति बिन ये गुमा नहीं देना ॥
यह नरतन अमूल्य है, गँवा नहीं देना ॥
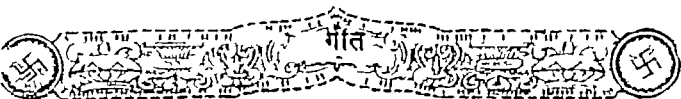
मानवता अपना लेना

[तज —वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया, सब की आंखो]

मानव हो करके मानव तुम, मानवता अपना लेना ।
इस जीवन से प्यारे प्राणी! सच्चा लाभ उठा लेना ।।ध्रुव।।

जन्म-जन्म के पुण्य उदय से, तुमने नरतन पाया है,
किन्तु ससारी झझट मे फंस सर्वस्व गंवाया है।
हाथ समय शुभ आया प्यारे,वीर चरण चित्त ला लेना,
मानव हो करके मानव तुम, मानवता अपना लेना ।।

मात, पिता, दारा, सुत, भाई, मतलब के सब प्यारे हैं,
कष्ट पडे जब आन शीश पर, होते मीठे, खारे हैं।
आन पडी भव-जल में नैया, जल्दी पार लगा लेना,
मानव हो करके मानव तुम, मानवता अपना लेना ।।

दीन-दुखी, असहाय तथा, दलितो से मित्रो प्यार करो,
निज जीवन को वार धर्म पर,औरो का उपकार करो।
"यश"सौरभ फैला कर,जग में,अजर अमर पद पा लेना,
मानव हो करके मानव तुम, मानवता अपना लेना ।।
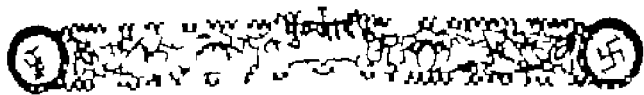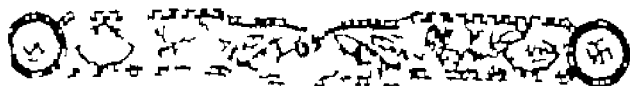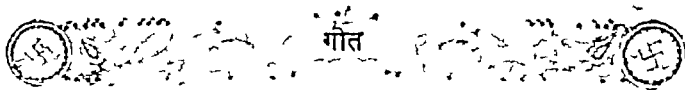
अगर संसार तरना है

[तर्ज —नहीं फर्याद करते हम, तुम्हें बस याद करते]

मिला है पुण्य से नरतन, वनाले धर्ममय जीवन,
अगर ससार तरना है ॥
हटा ले पाप से निज मन, लगा नित धर्म मे तन-मन,
अगर मसार तरना है ॥ध्रुव॥

दुनियाँ है फानी, राम कहानी,
झूठा है वचपन, झूठी जवानी ।
क्यो फँस इन मे खोता जीवन,सदा कर याद तू भगवन,
अगर ससार तरना है ॥

धन, जन, वैभव नही तुम्हारे,
स्वार्थ के है कुटुम्वी सारे ।
वचा इन से अपना जीवन, हटा छल-छन्द से तू मन,
अगर ससार तरना है ॥

दीन, दुखी की करले तू सेवा,
चाहे जो करना पार तू खेवा ।
वना "कीर्ति" ऐसा जीवन, कर जय-जय तेरी सव जन,
अगर समार तरना है ॥

न पापो मे फंस कर, जनम यह गंवाना ।
और कर न वदी, जिस से हो जग हंसाई ॥
सुगन्धित हो विश्व, सदा "यश" सौरभ मे ।
मिटा कर्म आठो, हो जिस से रिहाई ॥

— ० —

चेतावनी

[तर्ज- मेरा यह दिल है आवारा, न जाने किस पे]

मिला है नर रतन तुम को, नही इस को लुटा जाना ।
लगाकर धर्म मे तन-मन, सफल इस को वना जाना ॥ ध्रुव ॥
भ्रमित हो कर मरूस्थल मे, हरिण जल देख कर दौडे ।
भटक कर प्राण दे देता, न तुम ऐसे भुला जाना ॥
छोड वैभव जगत का सब, आखिर होना रवाना है ।
नही साथी कोई तेरा, न तू इस मे लुभा जाना ॥
सुखी है तो स्वय ही तू, दुखी है तो स्वय ही तू ।
भँवर मे डोलती नैया, न भव-सिन्धु डुबा जाना ॥
मनुज तन पाके जो तूने, अशुभ या शुभ कर्म कीने ।
वही तो साथ जाएंगे, नही कुछ और सग जाना ॥
जो चाहे "कीर्ति" जग मे, सदा कर काम नेकी के ।
यही है सार दुनियां मे, प्रभू का नाम ध्या जाना ॥

— ०.—

मुहब्बत भरा सन्देश

[तर्ज — कहीं सुख है कहीं दुख है इसी का नाम ———]

मुहब्बत से भरा सन्देश दुनियां को सुनाता चल ।
जमाने में अहिंसा धर्म का झण्डा लहराता चल ।। ध्रु व ।।
मुसीबत पर मुसीबत गर तेरे सिर पर अपार आएं ।
न कुछ परवाह कर उनकी कदम आगे बढ़ाता चल ।।
पड़ौसी मर रहा भूखा सगा भाई दुखी तेरा ।
मिटा कर भूख उस की तू फर्ज अपना निभाता चल ।।
कोई कड़वा कहे तुम को वचन तू प्रेम से सुनना ।
तू भर कर प्रेम का प्याला जमाने को पिलाता चल ।।
पसे से तू जमा सब को मिटा कर दुःख दीनों के ।
सुना कर सत्य-वाणी तू जमाने को जगाता चल ।।
अगर दिल मे तमन्ना है जहां में "कीर्ति" पाने की ।
उठाले भार सेवा का सुख जीवन बनाता चल ।।

—। ।—

नेक नसीहत

[तर्ज — जिन्दगी बनाने वाले जिन्दगी बनाए ———]

दुनियां में आने वाले ! नेकी कमा ले ।
जीवन अपना सफल बना ले ।। ध्रु व ।।

वडे पुण्य मे नरतन पाया ।
जग झंझटो मे पिण्ड छुडाले ॥
मात, पिता, सुत, स्वार्थ के सब ।
काम न तेरे, आने वाले ॥
दीन-दुखी जन जो मिल जाये ।
कष्ट मिटा, हृदय मे लगा ले ॥
जग मे महका "यश" सौरभ को ।
धर्म, कमा शिव पद को पा ले ॥

— o —

एक प्रश्न ?

[तर्ज- कभी खामोश हो जाना, कभी फरियाद कर]

जगत में आन क्या कीना ? प्रभु चरणो में चित्त दीना ?
अरे कुछ सोच तो गाफिल ? यहाँ पर क्या धर्म कीना ॥ ध्रुव ॥
फिरे लाखो तडपते, दीन-दुखिया इस जमाने मे ।
कभी उनकी वजा सेवा, सुयश का लाभ है लीना ॥
पडे मोह-नीद मे प्राणी, जनम अनमोल खोते हैं ।
कभी तूने जगाये हैं, वजा कर प्रेम की वीना ॥
न होकर फूल तू जग मे, किसी के भी चढा सर पर ।
मगर तू [illegible] वना कांटा, यह है सबसे वुरा जीना ॥
कमाले "[illegible] जग मे, जो चाहे सुख तू प्यारे ।
हुई ज[illegible] जिसने जीवन को सफल कीना ॥

— o —

जीवन न गँवा

[तर्ज- बारे भय्या बारे भय्या बाई रखना———]

गँवाए न गँवाए न गँवाए बन्देया !
जन्म मनुष्य न गँवाए बन्देया ! ओ—सुन सुन चेतन प्यारे ॥ ध्रुव ॥
तू ने नरतन पाया है हाथ समय शुभ आया है
फिर भी धर्म भुलाया है बाज न आए पाप से ।
प्रभु नाम न ध्याए ओ गाफिला ! जन्म गँवाए रे ॥
आगे कुछ न पायेगा तब पीछे से पछताएगा
तू सदा सुख पाए जो उपकार में मन लाएगा ।
कर ले जो करना तुझे फिर हाथ खाली जाएगा ॥
कर धर्म जिससे तेरे यह पाप सब कट जाएँगे ।
कीर्ति होगी जगत में मुक्ति का पद पाएँगे ॥
गँवाए न गँवाए न गँवाए बन्देया जन्म मनुष्य ॥

—:०:—

भलाई कीजिए

[तर्ज- ऐ दिल मुझे ऐसी जगह ले चल जहाँ कोई———]

आ के दुनिया में अगर कुछ तो भलाई कीजिए !
दूर कर नफरत धर्म की कुछ कमाई कीजिए ॥ ध्रुव ॥
पूर्व सञ्चित पुण्य से तुम को यह नरतन मिल गया ।
पाप से जीवन हटा दिल की सफाई कीजिए ॥

फानी हैं ससार सुख, इस मे न दिल अपना फंसा ।
पाप से जीवन हटा, दिल की सफाई कीजिए ॥
दीन, दुखिया जो तुझे, मिल जाय, छाती से लगा।
तन, मन, तथा धन से सदा, उसकी सहाई कीजिए ॥
जीवन सफल अपना बना कर "कीर्ति" जग मे फैला ।
भूले और भटके दिनो की, रहनुमाई कीजिए ॥

— ० —

जीवन उद्धार करलो

[तर्ज- चले जाना नहीं नैन मिलाके ‐]

नर जीवन का करलो उद्धार, चेतन प्यारे ओ० ॥ ध्रुव ॥
पुण्य उदय से तू ने, नरतन पाया है,
विषय और वासना मे, इस को गंवाया है।
इसे खोकर के तू, होवेगा ख्वार, ओ चेतन प्यारे ओ० ॥
कोई न सग जाए, कोई न सग आया,
सुख और दु ख जग के, दोनो हैं धूप–छाया।
इन से बच कर के तू, जीवन सुधार, ओ चेतन प्यारे ओ० ॥
प्रभु की वाणी से, सच्चा तेरा प्यार हो,
धर्म के जहाज मे तू, मानव सवार हो ।
जाना "कीर्ति" जो, भवोदधि पार, ओ चेतन प्यारे ओ० ॥

— ० —

उद्बोधन

[तर्ज ओ दूर जाने वाले वादा न भूल जाना —— —]

कुछ सोच ले तू प्यारे मोह नींद में क्यों सोया ?
कंकर के बदले तू ने जीवन रतन क्यों खोया ॥ ध्रुव ॥
मद मदन मूढ़ करके संसार में फँसा तू ।
तज धर्म ध्यान तूने पापों का बीज बोया ॥
पोखरी के पानी सम यह जीवन तुम्हारा जाता ।
मध बीच में ही बेड़ा तू ने यहाँ डुबाया ॥
वैभव के पीछे पागल बन कर यहाँ तू दौड़े ।
मोह जाल में फँसा था पछताया और रोया ॥
हो 'कान्ति' तुम्हारी मति नेक काम करना ।
जिया धर्म जिसने उसने कर्मों का मैल धोया ॥

— —

धर्म कमाई करना

[तर्ज [illegible] —— —]

प्यारे यहाँ में आके नित धर्म कमाई करना ।
नित धर्म कमाई करना करना ॥ ध्रुव ॥
हीरा सा नरतन पाया हाथ समय शुभ आया
फिर भी क्यों धर्म भुलाया ? पापों में चित्त लगाया !
करना नित धर्म कमाई करना ॥

सगी–सघाती प्यारे, स्वारथ विन होते न्यारे,
फानी सुख जग के सारे, धर्म ही पार उतारे।
करना नित धर्म, कमाई करना ॥
जीवन मे धर्म कमाना, दीनो के कष्ट मिटाना,
जिस से जग जाए जमाना, ऐसे "यश" गीत सुनाना।
करना, नित धर्म कमाई करना ॥

— ० —

दुनियाँ वालों से ?

[तर्ज ओ दिल वालो, दिल का लगाना अच्छा ...]

दुनियाँ वालो! पाप कमाना अच्छा है? नही कभी नही।
दिल को प्रभु चरणो से, हटाना अच्छा है? नही कभी नही॥ ध्रुव॥
पाया है नर जन्म अमोलक, इस को सफल बना ले।
दीन–दुखी जो मिले जगत मे, हाथो हाथ उठा ले॥
गाफिल बन्दे! जन्म गंवाना अच्छा है? नही कभी नही॥
आया था क्या करने जग मे? पर तू क्या कर बैठा!
प्रभु–ध्यान को तूने छोडा, फिरे मान मे ऐंठा॥
मोह मे आकर, जग मे लुभाना अच्छा है? नही कभी नहीं॥
चाहे यदि सुख? करले प्यारे, धर्म-कर्म रोजाना।
"यश" सौरभ से जग महका दे, नही पडे पछताना॥
समय अमोलक, यो ही विताना अच्छा है? नही कभी नही॥

— ० —

जरा सोच

[तर्ज जाएँ तो जाएँ कहाँ ? समझेगा कौन—]

जाना तुझे है कहाँ ?
आया था क्यों तू यहाँ ?
सोच जरा दिल में नादां !
जाना तुझे है कहाँ ॥ ध्रुव ॥

मुश्किल से तूने नर जन्म पाया
विषयों में लेकिन इसको गँवाया।
जान—जाम यह तो न समा।
जाना तुझे है कहाँ ॥

इस दुनिया में जो भी है आया
एक दिन उस को जाना ही पाया।
जिन्दगी का ठहरा नहीं कारवां
जाना तुझे है कहाँ ॥

"कीर्ति" चाहे धर्म कमा ले
जीवन यह आदर्श बना ले।
धर्म से सुखमय दोनों जहां
जाना तुझे है कहाँ ॥

मनुज से ?

[तर्ज- तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ]

मनुज क्यो जगत मे, फँसा चाहता है ?
है दल-दल, क्यो इस मे, धँसा चाहता है ॥ ध्रुव ॥

विषय वासना मे, जनम क्यो गँवाता ?
भला लाभ इस से, न क्यो तू उठाता ?
तू कौडी के वदले, क्यो कचन लुटाता ?
यो ही तुझ पे जग यह, हँसा चाहता है ॥

प्रभू नाम तूने, भला क्यो विसारा ?
मनुजता को तज कर, क्यो पशुता को धारा ?
तू लेता है मोह, मान, मद का सहारा !
तुझे पाप अजगर, डँसा चाहता है ॥

अरे ! छोड झझट, धर्म तू कमा ले ?
यह जीवन मनुज का, सफल तू वना ले !
फैला "कीर्ति" को, अमर तू कहा ले !
अगर मोक्ष मे, जा वसा चाहता है ॥

— ० —

धर्म कमा लेना

[नहीं मेरा यह मन है मानता न जाने किस पै———]
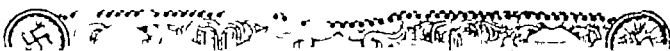
मनुज आये हो जग में तुम धर्म यहीं पर कमा लेना।
मिला जो नर जन्म तुम को सफल इस को बना लेना ॥ ध्रुव ॥

जो चाहे सुख मिले जग में तो तज दो मान और माया।
क्षमा-सन्तोष अपना कर सुखी जीवन बिता लेना ॥

यह सुख संसार के तलवार पर लिपटे शहद सम हैं।
न फँसना जाल में इन के स्वयं को तुम बचा लेना ॥

जिन्हें तू मानता अपने कदापि वे नहीं तेरे।
सभी हैं स्वार्थ के साथी तू दिल इन से हटा लेना ॥

सदा शुभ कर्म से ही बस निभाना साथ है तेरा।
इसी से धर्म की पूँजी यहीं में तू कमा लेना ॥

यदि संसार में चाहे चहुँ दिशि 'कीर्ति' फैले।
सदा सेवा में तन मन धन तथा जीवन लगा लेना ॥

जीवन सफल बना लेना

[तर्ज गरीब जान के हमको न तुम मिटा देना, तुम्ही ने]

दुनियां मे आन के, जीवन सफल बना लेना !
मानव जन्म मिला है, नफा इस से तू उठा लेना ॥ ध्रुव ॥

मोह–अज्ञान की, निद्रा मे काहे सोता है ?
विषयो मे क्यो तू, जीवन को अपने खोता है ?
तू धर्म ध्यान की, पूंजी यहाँ कमा लेना ,
मानव जन्म मिला है, नफा इस से तू उठा लेना ॥

सोच जरा, फिर भला, मौका कहाँ यह पाएगा ?
जो वक्त जा चुका है, वापिस नही वह आएगा ।
तज कर प्रमाद तू, सार्थक इसे बना लेना ,
मानव जनम मिला है, नफा इस से तू उठा लेना ॥

मद, माया, मोह आदि तेरे, पीछे लगे लुटेरे हैं ,
जीवन के सद्गुणो को जो, चारो तरफ से घेरे हैं ॥
फन्दे से इन के प्राणी ! अपने को तू बचा लेना ।
मानव जनम मिला है, नफा इस से तू उठा लेना ॥

जो चाहे "कीर्ति" तो दीनो के दुःख मिटाए जा ।
जप–तप से शुद्ध जीवन, अपना यहाँ बनाए जा ॥
कर्मों को काट के, मुक्ति को शीघ्र पा लेना ।
मानव जनम मिला है, नफा इस से तू उठा लेना ॥
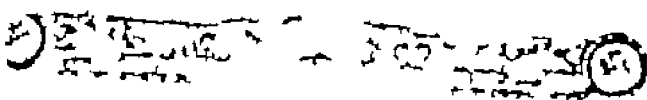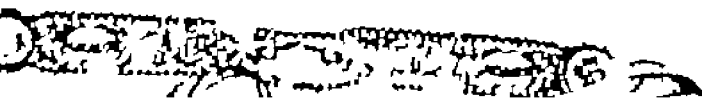
— o —

वै
रा
ग्य

धर्म कमाई करले

[तर्ज – मन डोले मेरा तन डोले मेरे दिल का गया ......]

धर्म कमाई करले भाई, यह जीवन है दिन चार रे–
तेरी पल-पल बीते उमरिया ॥ध्रुव॥

पूर्व पुण्य उदय से तूने मानव तन है पाया
इस को सफल बना ले प्राणी ! हाथ समय शुभ आया।
धर्म कमाई करले भाई, यह जीवन है दिन चार रे–
तेरी पल-पल बीते उमरिया ॥

फँस कर मोह माया में जिसने नरतन व्यर्थ गँवाया
भोगे नाना दुःख उसी ने अन्त समय पछताया।
धर्म कमाई करले भाई यह जीवन है दिन चार रे–
तेरी पल–पल बीते उमरिया ॥

जिसके जीवन के कण–कण में धर्म रंग है छाया
"मधु" सौरभ फैला उसका ही अजर अमर पद पाया।
धर्म कमाई करले भाई यह जीवन दिन चार रे–
तेरी पल–पल बीते उमरिया ॥
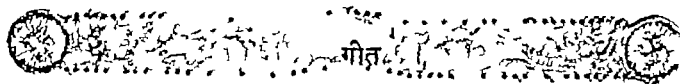
मानव नही, देवता

[तर्ज जरा सामने तो भा, भो छलिए ! छुप छु ।   ]

कुछ धर्म कमाई करले, नर जीवन का यही तो सार है।
तज धर्म-ध्यान, क्यो करता, तू मोह माया से प्यार है ॥ ध्रुव ॥
पूर्व पुण्य उदय से तूने, नरतन रतन यह पाया है ।
विषय भोगो मे फंस कर तूने, इस को व्यर्थ गंवाया है ॥
फिर कैसे तेरा उद्धार है, जव नैया तेरी मंझधार है ।
बिना नेक करम के वन्दे, कभी होगा न वेडा पार है ॥
राम भी चाहे, दाम भी चाहे, ऐसा कभी न हो सकता ।
दो नावो पर, चढ कर मानव, पार कभी न हो सकता ॥
वस यही जगत व्यवहार है, यहाँ कर्मों का खुला वाजार है।
इन्हे जीतने से होती जीत है, और हारने से होती हार है ॥
मोह माया ने तुझको मानव, चारो तरफ से घेरा है ।
धर्म बिना मानव जीवन मे, छाया घोर अधेरा है ॥
बस, धर्म ही तो आधार है, "यश" धर्म से जिसका प्यार है।
वह मानव नही, है देवता, उसकी पूजा करे ससार है ॥

— ० —
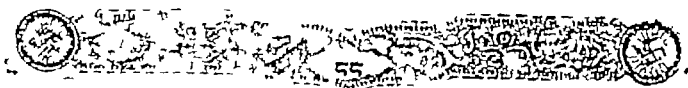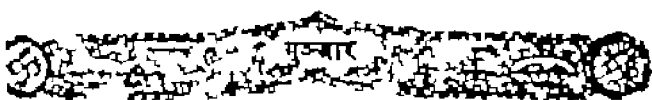
करले धर्म प्यारा

[तर्ज — अब मेरा कौन सहारा मेरे भगवन तुमको — —]

धर्म बिना कौन सहारा ?
प्यारे सज्जन! करले धर्म प्यारा ॥ ध्रुव ॥

पूर्व पुण्य उदय हुआ
तुझ को नरतन मिल गया।
फँस कर यहाँ मत इस को हारा
धर्म बिना कौन सहारा ॥

छोड़ कर मोह — मान तू
कर प्रभु का ध्यान तू।
जिस से जगत से पाए पारा
धर्म बिना कौन सहारा ॥

यदि चाहे उद्धार को ?
कर सदा उपकार को।
ऊँचा बने जीवन तुम्हारा
धर्म बिना कौन सहारा ॥

'शांति' जग में रमा
पाप से खुद को बचा।
पूरित हुआ जिस कर्म सारा
धर्म बिना कौन सहारा ॥

—:—

यों ही न गॅवा ?

[तर्ज- मेरा दिल यह पुकारे आजा]

कुछ धर्म कमा ले प्यारे ।
जीवन यह वना ले प्यारे ।
मिला तुझको यह समा ;
इस को यों ही न गँवा ॥ ध्रुव ॥

मोह की नीद मे क्यो पडा सो रहा ?
लाल अनमोल सा यह जनम खो रहा ?
उठ अव भी सभल, सीधे मारग पे चल ,
कुछ लाभ उठाले प्यारे ॥

जर – जमी व मका साथ मे क्या गए ?
मरते दम तो सभी कुछ यही रह गए ।
सारा फानीहै जहा, इस से दिल को तू हटा,
उपकार मे ला ले प्यारे ॥

तोड दे ऐ बशर मोह के पाश को ।
छोड दे क्रोध को, लोभ को, आस को ।
"यश" सौरभ फैला, कर्म-मल को जला ,
भगवान कहा ले प्यारे ॥

— ० —

प्रभु नाम सुमर

[तर्ज—जब तुम ही नहीं अपने दुनियाँ का ——]
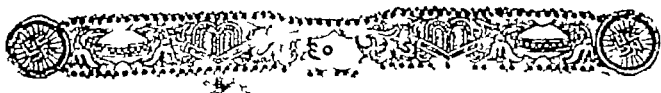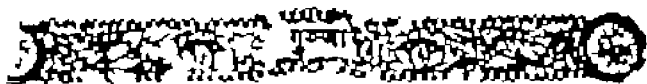
कर धर्म अरे प्राणी! जो मुक्ति को पाना है?
जो नाम से नरतन से यह जग मे समाना है ॥ध्रु व॥
सुत मात पिता दारा सब साथी है स्वार्थ के।
मरने के समय उन को कुछ काम न आना है ॥
धन महल अटारी और सुख—वैभव दुनियावी।
सब तज के तुझे जग से एकाकी ही जाना है ॥
दुखियो का भला कर तू सुख चाहे अगर प्यारे?
कर्तव्य के पथ से पग नहीं पीछे हटाना है ॥
कर सफल जन्म अपना महका "यश" सौरभ को।
प्रभु नाम सुमर जिसने तुझे पार लगाना है ॥

—:—

मिले शिव द्वारा

[तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश लगा कर ठेस ओ———]

तू धर्म से कर के प्यार, जग मे सुधार—
ओ चेतन प्यारा! जीवन है जाय तुम्हारा ॥ध्रु व॥
धन—वैभव के भण्डार सभी
है स्वार्थ का संसार सभी।
जो पार उतारे, धर्म ही एक सहारा
जीवन है जाय तुम्हारा ॥
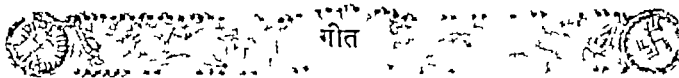
ससार मे क्यो भरमाया है ?
क्यो प्रभु का नाम भुलाया है ?
यह नाव डूबती जाय, बीच मंझधारा ,
जीवन है , जाय तुम्हारा ॥
यदि धर्म तथा उपकार करे ,
तो "कीर्ति" चहुं दिशि मे प्रसरे ।
मिटे जन्म–मरण का दु ख, मिले शिव–द्वारा ,
जीवन है जाय तुम्हारा ॥

— ० —

धर्म से चित्त लगा

[तर्ज- ओ चन्दा ! देश पिया के जा ओ]

ओ गाफिल ! धर्म से चित्त लगा ।
प्रभु नाम से मन मंदिर मे, आतम ज्योति जगा ॥ ध्रुव ॥
माया ने तुझ को है घेरा ,
छाया चारो ओर अन्धेरा ।
ज्ञान–दीप प्रगटा, ओ गाफिल ! धर्म से चित्त लगा ॥
चाहे सुख ? कर नेकी प्यारे ,
नर जनम यह तू मत हारे ।
इस को सफल बना, ओ गाफिल ! धर्म से चित्त लगा ॥
दीन–दुखी की सेवा कर के ,
दया–धर्म से अन्तर भर के ।
"यश" सौरभ फैला, ओ गाफिल ! धर्म से चित्त लगा ॥

— ० —

जगत उद्यान मे जो भी, खिले हैं पुष्प मन-हारी।
सभी मुर्झाएंगे पल मे, भला फिर मान क्या करना ?
करूंगा आज या कल बस, इसी मे जिन्दगी बीती।
अगर सुख चाहिए जग मे, सदा ही पाप से डरना ?
जगत सारा ही झूठा है, केवल सच्ची है जिन-वाणी।
जो चाहे "कीर्ति" जग मे, प्रभु का ध्यान नित धरना ?

— ० —

धर्म कमालो

[तर्ज- भजन बिना बावरे ! तूने हीरा जन्म ...]

तू तो कर ले धर्म चित्त लाय, जवानी तेरी ढल रही ॥ ध्रुव ॥
सत्पुरुषो की सगति मे आ, ले प्रभु का शुभ नाम।
अवसर बीता जाए बन्दे ! कर ले धर्म का काम ॥
मात—पिता, सुत कुटुम्ब, कबीला, झूठा है जग सारा।
वक्त पडे पर काम न आएं, छोड चलें मंझधारा ॥
धन—यौवन पा खुशी मनावे, ज्यों घन लख कर मोर।
एक दिन ऐसा आवे सब कुछ, पडा रहे इसी ठौर ॥
दीन दुखी की सेवा कर के, मन को विमल बनाय।
दया धर्म से प्रेरित हो कर, सयम पथ अपनाय ॥
चार दिनो यहाँ चाँदनी, अन्त अन्धेरी रात।
अब तो धर्म कमालो, तुमको "कीर्ति मुनि" समझात ॥

— ० —
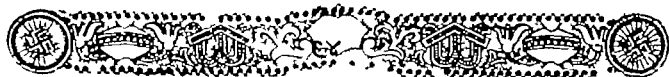
अगर सुख पाना है ?

[तर्ज- बाप का गीत मिलन के तू अपनी लगन के——]

किए जा धर्म लगन से सदा तन – मन से
अगर सुख पाना है ॥ ध्रुव ॥

जीवन थोड़ा जग में तुम्हारा कर लो इस को सफल ।
नहीं तो पछताओगे फिर प्यारे, जब जाए वक्त निकल ॥
तिरेगा करमन से प्रभु के सुमरन से
अगर सुख पाना है ॥

तन धन यौवन अथिर सभी है फिर मन काहे लुभाय ?
सब कुछ नहीं रह जावेगा प्यारे, संग न कुछ भी जाय ॥
सेवा दीन की बन से तू कर ले गुरु मन से
अगर सुख पाना है ॥

कीर्ति चाहे तो धर्म कमा ले साथ नहीं कछु जाय ।
धर्म से दुःख-संकट मिट जाए अजर अमर पद पाय ॥
प्रीती हो तेरी गुणन से सज्जन सज्जन से
अगर सुख पाना है ।

— १ —

प्रभु गीत गाओ

[तर्ज : मन्दिर वाले बालमा मन हमारे भाई——]

जीवन जाय तुम्हारा रे धर्म को कर ले प्यारे—
सफल बनाओ गाओ प्रभु गीत गाओ ॥ ध्रुव ॥

पुण्योदय से तुम ने नरतन पाया है, पाया है
मोह-माया में फँस कर इसे गँवाया है गँवाया है ।

समय सुनहरी आया रे, कर के शुभ कर्म जगत मे—
धर्म कमाओ, गाओ , प्रभु गीत गाओ ॥
यह ससारी वैभव सारा फानी है, फानी है,
काया, माया, यह भी आनी जानी है, जानी है।
कौडी वदले कचन को, काहे लुटावे प्यारे—
धर्म कमाओ, गाओ , प्रभु गीत गाओ ॥
प्रभु नाम ही एकमात्र आधारा है, आधारा है ,
दान, धर्म ही केवल यहां तुम्हारा है, तुम्हारा है ।
"कीर्ति" चाहो जग मे जो ? पर उपकार कर के—
धर्म कमाओ गाओ , प्रभु गीत गाओ ॥

— ० —

जो चाहे सुख होय ?

[तर्ज- पिंजरे के पंछी रे " तेरा दर्द न जान कोय]

दुनियाँ मे प्राणी रे अपना जीवन व्यर्थ न खोय ।
धर्म कमाई कर ले प्यारे, जो चाहे सुख होय ॥ ध्रुव ॥
पूर्व पुण्य उदय जव आया, तू ने मानव तन को पाया रे।
इस नरतन से लाभ उठा ले, जो चाहे सुख होय ॥
मदमाती यह तेरी जवानी, स्वप्ने की सी राम कहानी रे।
इस से तू उपकार कमा ले, जो चाहे सुख होय ॥
दुनियाँ के यह लोग निराले, तन के उजले मन के काले रे।
इन से अपना आप बचा ले, जो चाहे सुख होय ॥
जीवन यह आदर्श बनाना, "यश" सौरभ से जग महकाना रे।
सेवा-मन्त्र को तू अपनाले, जो चाहे सुख होय ॥

— ० —

धर्म कमाना

[तर्ज दम भर जो उधर मुह फेरे, ओ———]

मानुष तन से लाभ उठाना ओ बन्दे !
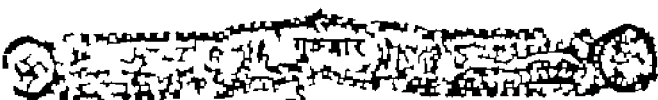
जो चाहे तू सुख पाना ? जीवन में धर्म कमाना ॥ ध्रु व ॥

यह जीवन कागज की पुड़िया गलते लगे न देरी ।
धर्म कमा कर के तू मानव ! मिटा चौरासी फेरी—
झट बन जा चतुर सयाना ॥ ओ बन्दे ॥

नदी—नीर—सम यह यौवन है प्रति—पल बहता जाए ।
धन्य—धन्य है प्राणी वह जो इस से लाभ उठाए ॥
पूजेगा उसे जमाना ॥ ओ बन्दे ॥

दीन—दुखी जो पाए जग में सेवा उन की कर ले ।
यश सौरभ फैला कर बन्दे ! भव-जल पार उतर ले ॥
दुष्कर्म को दूर भगाना ॥ ओ बन्दे ॥

— —

पुण्य वेला

[तर्ज रात भर का है महमा अँधेरा किस के— ——]

चार दिन का यहां बस है मेला ।
झूठे दुनियां का झूठा झमेला ॥ ध्रु व ॥

तू ने नरतन अमोलक जो पाया
विषय भोगों में काहे गँवाया ?
सार बलता क्यों पापों का ठेला
झूठी दुनियां का झूठा झमेला ॥

यह ठाठ पड़ा सब रहेगा
साथ तेरा नहीं कोई देगा ।
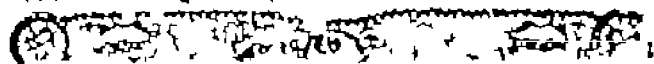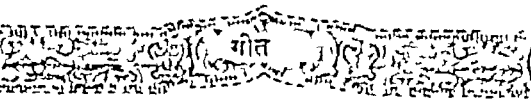
जाना तुझ को है जग मे अकेला,
भूठी दुनियां का भूठा झमेला ॥
धर्म पूंजी जहां मे कमा ले,
जीवन अपना सफल तू बना ले ।
आई—आई है "यश" पुण्य वेला,
भूठी दुनियां का भूठा झमेला ॥

—०—

ले पद निर्वानी का

[तर्ज रेशमी सलवार कुर्ता जाली का]

चेत, भरोसा नही यहां जिन्दगानी का ।
नही सहाई कोई, धर्म बिन प्राणी का ॥ ध्रुव ॥
मोह-माया की निद्रा मे, क्यो गाफिल हो कर सोता ?
ससार के इस झझट मे, क्यो जन्म अमोलक खोता ॥
नही घर नानी का ?
नश्वर है जग मे प्यारे ! यह काया—माया तेरी ।
है वादल की सी छाया, जिसे मिटते लगे न देरी ॥
तू बुलबुला पानी का ॥
सब छोड के माल-खजाने, तुझे एक दिवस है मरना ।
भूठे वैभव का प्यारे ! फिर मान भला क्या करना ?
या मस्त जवानी का ॥
जग मे "यश" सौरभ फैला, जीवन को सफल बना कर ।
शुभ ध्यान तथा जप-तप से, कर्मो का मैल मिटा कर ॥
ले पद निर्वानी का ॥

—०—

कोई नहीं तेरा

[तर्ज यह दुनियां है यहां गम का जमाना किस——]

तू कर ले शुभ करम प्यारे ! कोई जग में नहीं तेरा ।
प्राप्त कर सार नर भव का कोई जग में नहीं तेरा ॥ ध्रुव ॥
चौरासी लाख योनी मे फिरा भटकता धरे जतन !
मिला यह पुण्य से नरतन मिटा तू भव-भ्रमण फेरा ॥
धर्म से मोक्ष पाता है पाप नर्कों में ले जाता ।
इसी से पाप तज कर के लगा ले धर्म में डेरा ॥
सदा चल सत्य के पथ में अहिंसा धार ले दिल में ।
ज्ञान ज्योति जगा कर के मिटा अज्ञान — अन्धेरा ॥
दया दम दान और सेवा तथा परमार्थ में प्यारे !
यह जीवन लगा दे और, छोड़ सम्बन्ध मैं–मेरा ॥
जहाँ मे 'कीर्ति' चाहे तो ? मिटा दे कर्म के मल को ।
यही मुक्ति का मार्ग है कि जिस पर है कदम तेरा ॥

—:0:—

जागृति-सन्देश

[तर्ज आबाद न करो है दुनिया मेरी — —]

दुनियाँ मे क्यों फँसा है ? आया जो, वह गया है ।
कुछ सोच ले तू प्यारे! नरतन तुझे मिला है ॥ ध्रुव ॥
यह जिन्दगी के दिन यों पल—पल मे जा रहे हैं ।
एक बार जो गए फिर, वापिस न आ रहे हैं ॥
कर धर्म—ध्यान प्यारे ! चाहे अगर भला है ॥
धन धाम महल माड़ी रथ-घोड़े या कि हाथी ।
संगी संघाती तेरे कोई नहीं है साथी ॥

वही साथ देगा केवल, शुभ कर्म जो किया है ॥
जो चाहो इह जगत मे, "कीर्ति" हमारी छाए ?
उस की ही होती पूजा, दु ख जग के जो मिटाए ॥
उपकार से ही जीवन, आदर्श यह बना है ॥

— ० —

धर्म से चित्त लगाना

[तर्ज गम दिए मुस्तकिल, कितना नाजुक --]

पाया नरतन रतन, नेंक अपना चलन—
तुम बनाना, प्यारे ! धर्म से चित्त लगाना ॥
वीर भगवान को सच्चे निज भान को—
ना भुलाना, प्यारे ! धर्म से चित्त लगाना ॥ध्रुव ॥

धन — माल यही सब रहेगा ,
साथ कुछ भी नही जा सकेगा ।
सिर्फ ऐमाल को, नेको बद खयाल को-
सग जाना, प्यारे ! धर्म से चित्त लगाना ॥

धर्म — पूंजी जहाँ मे कमा ले ,
पाप — मार्ग से खुद को बचा ले ।
तज दुराचार को, करना उपकार को-
तुम रोजाना , प्यारे ! धर्म से चित्त लगाना ॥

दीन - दुखियों के दु ख मिटा कर ,
विश्व मे "कीर्ति" को फैला कर ।
कर के सफल जनम, काट आठो कर्म –
मुक्ति पाना, प्यारे ! धर्म से चित्त लगाना ॥

— ० —

प्राणी से ?

[तर्ज़ : मेरा दिल तोड़ने वाले मेरे दिल की दुआ ———]

जगत जंजाल में फँस कर हुआ मस्तान क्यों प्राणी ?
मनुज तन पा गँवा तूने प्रभु का ध्यान क्यों प्राणी ॥ ध्रुव ॥
जगत व्यवहार में पड़ कर तुझे क्या मिल गया प्यारे ?
सभी मतलब के साथी हैं हुआ हैरान क्यों प्राणी ॥
भलाई से भलाई और बुराई से बुराई है ।
धर्म से प्यार है जैसा हुआ बेमान क्यों प्राणी ॥
नहीं काया तलक तेरा यहाँ पर साथ देती है ।
तो फिर क्या अन्य का कहना ? करे अभिमान क्यों प्राणी ॥
भला तू खेद क्यों करता ? जगत का ढंग ही ऐसा ।
भुलाकर छोड़ देता है, बने अजान क्यों प्राणी ॥
कर यदि धर्म तो जग में यहाँ विधि 'कीर्ति' छाए ।
भुला माया में फँस तूने प्रभु गुण-गान क्यों प्राणी ॥

—: :—

नश्वर जीवन

[तर्ज़ : दुनिया में रहना चाहे, मेरा नाम दुखड़ा जन-जन ———]

जीवन यह बीता जाए, कुछ करो कमाई आगे की ।
गुरुवर निशि-दिन समझाएँ कुछ करो कमाई धाम की ॥ ध्रुव ॥
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों से पाया नरतन प्यारा ।
फिर भी तूने विषय - भोग में फँस कर इसको हारा ॥
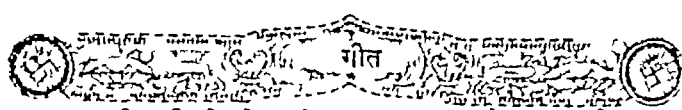
धर्म-कर्म से नेह तोड कर, करता है मन मानी।
कर-कर जुल्म अपार अरे ! तूने खोई जिन्दगानी ॥
सूर्य चढा गाफिल कितना ? अब तो उठ धर्म कमा ले।
कर जीवन उत्थान जगत मे, "यश" सौरभ फैला ले ॥

— ० —

स्वारथ के सब मीत

[तर्ज देखी झूठी प्रीत जगत की, देखा झूठी]

स्वारथ के सब मीत, जगत मे ॥ ध्रुव ॥
मात, तात, सुत, बहन या भ्राता,
स्वारथमय है जग का नाता।
स्वारथ की सब प्रीत, जगत मे ॥
फल-युत वृक्ष पर पछी आएँ,
शुष्क हुए पर पास न जाएँ।
यह ही यहाँ की रीत, जगत मे ॥
सुख मे सब जन प्रीति करते,
शीघ्र ही सारे पीछे टरते ॥
जाए सुख जब बीत, जगत मे ॥
दुनियाँ एक मुसाफिर खाना,
इस मे जीवन नही फँसाना।
सन्त कहें मन जीत, जगत में ॥
धर्म—ध्यान से चित्त लगाना,
जग मे "यश" सौरभ फैलाना।
गा लो प्रभु गुण गीत, जगत मे ॥

— ० —

धर्म कर ले

[तर्ज पाप भी को धप भी गो जाम जमाना------]

करले धर्म ओ गाफिला ! जीवन है पल-पल जा रहा ।
मानव तन अनमोल को व्यर्थ में क्यों गँवा रहा ॥ ध्रुव ॥
नाम प्रभु का भूल कर फँसता क्यों मोह-जाल में ?
जागा न जो मोह नींद से पीछे वही पछता रहा ॥
फानी है सुख संसार के स्वारथ के संगी सभी ।
साथ न देंगे कभी तेरा इन में क्यों दिल फँसा रहा ॥
बिजली के चमत्कार सम अथिर सभी संसार है ।
विषय-सुख में भुला के क्यों पाप की पूँजी कमा रहा ॥
'कीर्ति' की यदि है कामना ? जीवन में धर्म करले ।
धर्म ही तो संसार से पार सभी को लगा रहा ॥

—: :—

ऐ सज्जना ?

[तर्ज ऐ दुनिया के ओर किसा मेरा ------ --]

जग में तूने आके बता क्या लिया ?
काम अच्छा क्या किया ? ऐ सज्जना ॥ ध्रुव ॥
आखों खुले आई ठेरे, रोते दिन रात है ।
और तू मजे उड़ावे पूछता न बात है ॥

करता है पाप, नही चाहता भलाई तू।
थोडी सी भी देर को, नही छोडता बुराई तू॥
जीवन सुकृत्य बिना, हो रहा उजाड है।
शीश पर मुसीबतो का, छा रहा पहाड है॥
विश्व मे चमकना बन के आफताव तू।
"कीर्ति" की सुगन्ध को, फैलाना बन गुलाव तू॥

— ० —

दूर तेरी नगरिया

[तर्ज नगरी-नगरी द्वारे द्वारे ढूँढू रे सावरिया]
पल-पल कर के तेरी प्यारे! बीत रही उमरिया।
जल्दी-जल्दी कदम बढा तू, दूर तेरी नगरिया॥ ध्रुव॥
पूर्व पुण्य उदय से तूने, मानव तन यह पाया है,
अब भी चेत जा भोले प्राणी, हाथ समय शुभ आया है।
सुकृत जल से भरले प्यारे! जीवन की गागरिया,
पल-पल कर के तेरी प्यारे! बीत रही उमरिया॥
झूठा है धन-वैभव सारा, इस ने साथ न जाना है,
इस अस्थिर जीवन मे केवल, धर्म ने साथ निभाना है।
करना हो तो करले जग मे, वनता क्यो बावरिया,
पल-पल कर के तेरी प्यारे! बीत रही उमरिया॥
दानवता तज कर के जिसने, मानवता अपनाई है,
दया, अहिसा, विश्व-मैत्री से, जिसने प्रीति लगाई है।
उस ने 'यश" सौरभ फैला कर, सफल करी जिन्दडिया,
पल-पल कर के तेरी प्यारे! बीत रही उमरिया॥

— ० —
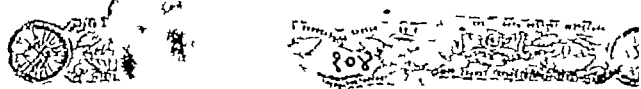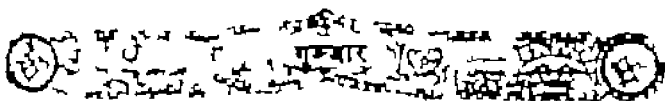
कुछ कर ले

[illegible]

कुछ कर ले रे बन्दे ! कि जग में तेरा हुआ है आना ॥ ध्रु० ॥

पूर्व पुण्य उदय से तूने मानव तन है पाया
कर लेगा कुछ नेक कमाई हाथ समय शुभ आया ।
पर तूने जग झंझट में यदि यों ही इसे गँवाया
फिर तो तुझ को कर मल-मल कर हाय पड़े पछताना ॥

मात पिता धन कुटुम्ब कबीला कोई न साथी तेरा
चार दिनों की चमक चाँदनी अन्त में घोर अन्धेरा ।
फिर क्यों फँस कर मोह-माया में करता मेरा-मेरा
ज्ञान-नेत्र से देख बावरे ! अपना कौन बेगाना ॥

मोह नींद से जाग जा प्यारे ! मानवता अपनाले
दीन दुखी की सेवा कर के जीवन सफल बना ले ।
"चन्द" सौरभ फैला कर जग में अजर अमर पद पा ले ॥
इस से तुझ को याद करेगा सारा सर्व जमाना ॥

दुनियाँ मुसाफिरखाना

[तर्ज रेशमी सलवार कुर्ता जाली का]
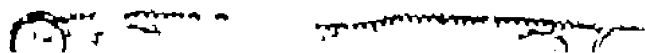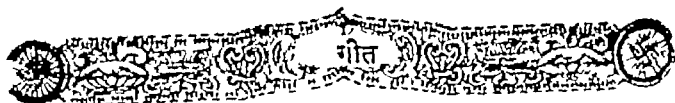
पगले ! दुनियां देख मुसाफिरखाना है ।
कर ले कुछ शुभ काम, अगर सुख पाना है ॥ ध्रुव ॥

कितने-कितने बलशाली, आए और जग पर छाए !
लेकिन उस काल बली से, हर्गिज ना बचने पाए ॥
हुए वो रवाना हैं ॥

धन, यौवन, मोह, माया मे, फंस कर क्यो निज को भूला ?
नश्वर इस तन पर मानव, क्यो गर्वित होकर फूला ?
नही सग जाना है ॥

ढल गया, चढा जो एक दिन, जो खिला वही मुर्झाया ।
मानव बन कर के जिसने, मानवता को अपनाया ॥
वही तो सयाना है ॥

"कीर्ति" जग मे फैला कर, जीवन आदर्श बना ले ।
नित धर्म,-ध्यान, जप—तप, से, कर्मों की मैल मिटा ले ॥
जो शिव पुर जाना है ॥

— o —

आत्म ज्योति जगा

[तर्ज ना यदि यह होता चांदी आने दर्पण ——]

झूठी जग की माया प्यारे ! है बादल की छाया ।
इस से तू चित्त हटा ले कुछ जग में धर्म कमा ले ॥ ध्रु॰ ॥
पुण्य उदय आया तूने नरतन पाया जो मिले न बारम्बार ।
लाभ तू उठा ले प्यारे ! सफल बना ले प्यारे कर के पर उपकार ॥
झूठी जग की माया प्यारे ! है बादल की छाया ।
इस से तू चित्त हटा ले कुछ जग में धर्म कमा ले ॥
जितने भी संगी प्यारे स्वार्थ के मीत सारे, कोई न रक्षन हार ।
धर्म ही है मीत तेरा करता जो पार बेड़ा सच्चा तारन हार ॥
झूठी जग की माया प्यारे ! है बादल की छाया ।
इस से तू चित्त हटा ले कुछ जग में धर्म कमा ले ॥
मोह की क्यों नींद सोता समय अनमोल खोता जाग अरे तू जाग ।
विषय विकार यह करता है ख्वार तू त्याग इन्हीं को त्याग ॥
झूठी जग की माया प्यारे ! है बादल की छाया ।
इस से तू चित्त हटा ले कुछ जग में धर्म कमा ले ।
कर उपकार, निज जीवन सुधार जिस से हो तेरा कल्याण ।
'कीर्ति' कमा के आत्म ज्योति को जगा के बन जा तू जग में महान ॥
झूठी जग की माया प्यारे है बादल की छाया ।
इस से तू चित्त हटा ले कुछ जग में धर्म कमा ले ॥

— । —

कौन यहाँ पर है तेरा ?

[तर्ज- वृन्दावन का कृष्ण कन्हैया सब का प्राणों का]

स्वारथ की है दुनियांदारी, कौन यहां पर है तेरा ?
सोच-समझ ओ भोले प्राणी ! करता है क्यों मेरा-मेरा ॥ ध्रुव ॥
नश्वर तन, धन, और यौवन पा, क्यों गर्वित हो फूला है ?
माया-मोह में फंस कर मूरख ! प्रभु नाम क्यों भूला है ?
धर्म कमाई कर ले गाफिल ! मिट जाए जन्म-मरण का फेरा ।
स्वारथ की है दुनियांदारी, कौन यहां पर है तेरा ? ॥
सत्य, शील, सन्तोष-धर्म को, तूने बिल्कुल छोड दिया !
सद्गुण तज कर गाफिल तू ने, दुर्गुण से नेह जोड लिया !
क्रोध, मान, छल छंद आदि ने, यहां जमाया है डेरा ।
स्वारथ की है दुनियांदारी, कौन यहां पर है तेरा ॥
सद्गुरु की ले शरण बावरे ! जो चाहे सुख पाना तू ?
जीवन में शुभ कर्म कमा कर, "यश" सौरभ फैलाना तू ।
जिस से जग में छाए, "कीर्ति" टूट जाए कर्मों का घेरा ।
स्वारथ की है दुनियांदारी, कौन यहां पर है तेरा ?

— o —

वैराग्य बारा-मासा

[तर्ज- सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो ! बापू की यह अमर----------]

निज जीवन आदर्श बना ले पता नहीं कब चल देना है ?
नहीं साथ जाएगा कुछ भी पाप-पुण्य ही संग लेना है ।। ध्रु व ।।

चैत्र

चैत्र चेत जाना भव्य प्राणी ! अवसर नीका आया है ।
पूर्व पुण्य उदय से प्यारे ! तू नरतन पाया है ।।
दूर हटा कर जग—झंझट को, जीवन सफल बना ले ।
बने जहाँ तक प्यारे प्राणी ! जग में धर्म कमा ले ।।

वैशाख

वैशाख बैठ कर प्रभु—भजन कर जो काटे जग-बन्धन ।
सेवा में जुट जा तू प्यारे ! सुन दीनों का क्रन्दन ।।
देश—धर्म की बलि वेदी पर, हँस—हँस प्राण चढ़ाना ।
जीवन दीपक जला — जला कर, आगे कदम बढ़ाना ।।

ज्येष्ठ

ज्येष्ठ जीतना पाँच इन्द्रियाँ अति दुष्कर कहलाता ।
वीर वही प्राणी जग में जो विजय पाँच पर पाता ।।
मन इन का सरदार कहा जो इस को वश में करता ।
जीवन सफल कर के अपना वह पाप — पङ्क को हरता ।।

आषाढ़

आषाढ, आकबत मे प्राणी को, धर्म साथ है देता ।
धार्मिक जन अपनी, जीवन नैया को सुख से खेता ॥
जो धर्म छोड देते प्राणी, वह अन्त समय पछताते ।
किन्तु किए कर्म उन के, हैं फिर वापिस नही आते ॥

श्रावण

श्रावण, श्रवण करो गुरु-वाणी, जो काटे भव — फन्दा ।
बिना श्रवण सच्ची वाणी के, जीवन होता गन्दा ॥
नही कुसगति मे पड कर के, बीज पाप के बोना ।
वरना अन्त समय मे तुम को, अवश्य पडेगा रोना ॥

भाद्रपद

भाद्र, भरोसा इस जीवन का, नही जरा भी करना ।
कमल — पत्र पर ओस विन्दु सम, इस को प्यारे लखना ॥
यह जीवन कागज की पुडिया, बूंद लगे गल जाए ।
पता नही इस नश्वर तन का, कब धोखा दे जाए ?

आश्विन
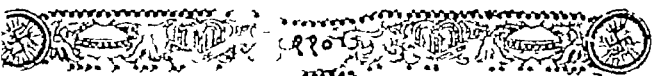
आश्विन माया — तृष्णा दोनों भव — भव में दुःख दाई ।
इन दोनों से नाता तोड़ो सोचो समझो भाई ॥
पतन गर्त में तुझ को प्यारे ! यह दोनों ले जाएँ ।
अपने चंगुल में फँसा — फँसा कर तुझ को खूब रुलाएँ ॥

कार्तिक

कार्तिक, कर्म तेरा जैसा होगा वैसा फल पाएगा ।
बोएगा यदि पेड़ बबूल तो आम कहाँ से आएगा ?
सुख—दुःख का मिलना प्यारे ! कर्मानुसार होता है ।
इधर — उधर फिर प्राणी यों ही व्यर्थ समय खोता है ॥

मार्गशीर्ष

मार्गशीर्ष माता भ्राता सब स्वारथ का है नाता ।
जब दुःख — संकट आन पड़े तब काम न कोई आता ॥
पल भर को यह खिली चाँदनी आगा मगर अन्धेरा ।
इस स्वप्ने से संसार में फँस क्यों करता मेरा—मेरा ?

पोप

पोप, परदेशी मानव तू है, स्थान तेरा है मुक्ति ।
किन्तु इस ससार मे तुझको, खेंच रही है शक्ति ॥
फिर क्यो आकर इस सराय मे, प्यारे! आज लुभाया ।
चल अब जल्दी कूच करो, सन्देश काल का आया ॥

माघ

माघ, मात्र धर्म रक्षक है, क्यो नहीं इसको करता ?
फँस कर ससारी बन्धन मे, पाप—मार्ग पग धरता ॥
धर्म आराधन कर ले प्यारे! जिस से हो छुटकारा ।
दु खो से हो मुक्त यह, सुख पाए आत्म तुम्हारा ॥

फाल्गुण

फाल्गुण, फिक्र करो आगे को, जहाँ है तुम को जाना ।
गाफिल क्यो बठे हो ? जल्दी, सफर सामान बनाना ॥
जीवन ज्योति जगा जगत मे, "यश" सौरभ फैलाओ ।
कर्म—बन्ध से पा छुटकारा, सिद्ध — बुद्ध हो जाओ ॥

— ० —

विहँसती कलियाँ

प्रभु से प्यार हो गया

[तर्ज़ ओ—मुझे किसी से प्यार हो गया प्यार हो———]
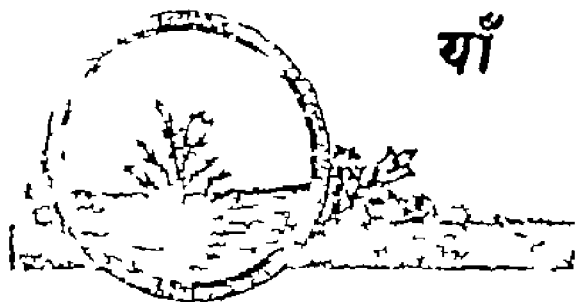
ओ—मेरा जीवन सुधार हो गया सुधार हो गया
प्रभु से प्यार हो गया प्रभु से प्यार हो गया ॥ प्र ग ॥

भूला फिरता था जग में भुमा कर
खोया विषयों में नरतन को पा कर।
गुरु ज्ञान दिया तब मान हुआ कुछ धर्म किया
ओ——मेरा जीवन सुधार हो गया ॥

दीन—दुखियों का जब दुःख मिटाया
और पतितों को ऊँचा उठाया।
पाया सच्चा मज़ा दूर खामी हुआ जन्म सफल हुआ
ओ——मेरा जीवन सुधार हो गया ॥

सब दुर्गुण जीवन से हटाए
और सद्गुण हृदय में अपनाए ॥
कटी पाप घटा अन्धकार हटा धर्म भानु प्रगटा
ओ——मेरा जीवन सुधार हो गया ॥

"कीर्ति" है हुई जग में भारी
ना रही अब कर्म की बीमारी।
छोड़ा मोह-मान है एक प्रभु ध्यान है पाया शिव-स्थान है
ओ——मेरा जीवन सुधार हो गया ॥

—:o:—

सत्संगति करो

[तर्ज — [illegible], है यही जिंदगी —]

होगा सफल जनम, सब मिटेंगे भरम, सहारा हमारा ।
सत्संगति करो बन्धु प्यारा ॥ ध्रुव ॥

पुण्य भारी तुम्हारा हुआ है, तुम को नरतन रतन जो मिला है ।
सन्त का संग कर, पाप कर्मों से डर, पा शिव-द्वारा ॥
सत्संगति करो बन्धु प्यारा ॥

सत्संगति पार उतारे, काम बिगडे सभी है सुधारे ।
मिटे दुख सदा, मिले सुख सदा, सत्संग द्वारा ॥
सत्संगति करो बन्धु प्यारा ॥

स्वाति बूंद पडे सीप माय, उसका सुंदर मोती बन जाय ।
जीवन शुद्ध बने, और जग का मिले, तट किनारा ॥
सत्संगति करो बन्धु प्यारा ॥

जिन ने सत्संग से नेह लगाया, उसने अजर अमर पद पाया ।
सत्संग जो करे, "मधु" उस का प्रसरे, जग मे भारा ॥
सत्संगति करो — प्यारा

—०—

स्वतन्त्रता

[———]
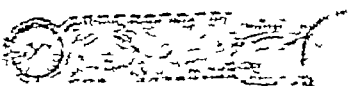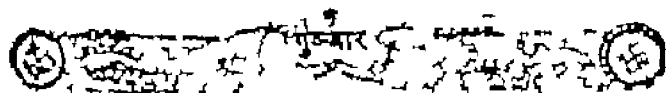
सब से बुरा है जीना मित्रो! परतन्त्र हो कर।
मरना भी है श्रेयस्कर मित्रो! स्वतन्त्र हो कर॥ प्र म॥

परतन्त्रता के संग में यदि हो सुधा का प्याला?
उस को कभी न पीना सुख चाहे देवे बाला।
विष का भी पान करना अच्छा स्वतन्त्र हो कर॥

मिष्टान्न मेवे सुन्दर, चाहे जो हृदय-मोहन
बन कर गुलाम खाना अच्छा न भोग मोहन।
पत्तों से पेट भरना अच्छा स्वतन्त्र हो कर॥

कमख्वाब या जरी की होवे पोशाक तन में
परतन्त्रता को फिर भी हर्गिज न लाना मन में।
खद्दर स्वदेशी लेना अच्छा स्वतन्त्र हो कर॥

परतन्त्र बन मिलें यदि तुम को महल अटारी
इस से कभी न इज्जत होगी यहाँ तुम्हारी।
टूटा सा झोंपड़ा भी अच्छा स्वतन्त्र हो कर॥

स्वतन्त्रता पे तन मन, धन सब निसार कर दो
सुपन्थ "यश" धर्म की जन-जन मे वीर! भर दो।
जीवन सदा बिताना अच्छा स्वतन्त्र हो कर॥

— —

कर्म-चक्र

[तर्ज कल जेहडे मन लक्खपती, अज पल्ले कोई ·]

कर्म वडे वलवान जगत मे, भेद न कोई पाया ।
इन कर्मो ने फँमा जाल मे, सारा जगत नचाया ॥
मैं कोई झूठ वोलिया ? कोई ना । मैं कोई कुफ्र तोलिया ? कोई ना ।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥ ध्रुव ॥
हरिश्चन्द्र कर्मो के कारण, वीच वाजार विकाए ।
पाँचो पाण्डव, द्रोपदी रानी, कष्ट अनेक उठाए ॥
मैं कोई झूठ वोलिया ? कोई ना । मैं कोई कुफ्र तोलिया ? कोई ना ।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥
राम — लखन और जनक दुलारी, गए वनो के माही ।
सेठ सुदर्शन कर्मो कारण, विपदा वडी उठाई ॥
मैं कोई झूठ वोलिया ? कोई ना । मैं कोई कुफ्र तोलिया ? कोई ना ।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥
कर्म — जाल को जिस ने तोडा, वह हो वडा सयाना ।
हुई "कीर्ति" जग मे भारी, मुक्ति किया ठिकाना ॥
मैं कोई झूठ वोलिया ? कोई ना । मैं कोई कुफ्र तोलिया ? कोई ना ।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥

— ० —

प्रेम दीवाना

[तर्ज मन मन का म म पुकारे — —]

मन बन का प्रेम दीवाना ॥ ध्र व ॥

प्रेम की चादर प्रेम बिछौना
प्रेम पलंग पर प्रेम से सोना ।
प्रेम का हो सब बाना ॥

प्रेम की वाणी प्रेम की शिक्षा
प्रेम ही पात्र और प्रेम ही भिक्षा ।
प्रेम से मोक्षम पाना ।

प्रेम की नगरी प्रेम का मन्दिर
प्रेम की ज्योति जगा कर अन्दर ।
प्रेम के दर्शन पाना ॥

प्रेम ही जीवन प्रेम ही आयु
प्रेम अमृत और प्रेम ही वायु ।
प्रेम से "यश" फैलाना ॥

—।—

महान् पर्व

[तर्ज इक बादशाही —]

आया पर्व महान् ! सम्वत्सरी आया पर्व महान् ॥ ध्र व ॥

जो करता इस का पालन
पावन होता उस का तन मन ।
हो जीवन कल्याण ॥

कर्म-चक्र

[तर्ज- कल जेहड़े मन लखपती, अज पल्ले कोई ·]

कर्म वडे वलवान जगत मे, भेद न कोई पाया।
इन कर्मों ने फँसा जाल मे, सारा जगत नचाया॥
मैं कोई झूठ वोलिया ? कोई ना। मैं कोई कुफ तोलिया ? कोई ना।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥ ध्रुव ॥
हरिश्चन्द्र कर्मों के कारण, वीच वाजार विकाए।
पाँचो पाण्डव, द्रोपदी रानी, कष्ट अनेक उठाए॥
मैं कोई झूठ वोलिया ? कोई ना। मैं कोई कुफ तोलिया ? कोई ना।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥
राम — लखन और जनक दुलारी, गए वनो के माही।
सेठ सुदर्शन कर्मों कारण, विपदा वडी उठाई॥
मैं कोई झूठ वोलिया ? कोई ना। मैं कोई कुफ तोलिया ? कोई ना।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥
कर्म — जाल को जिस ने तोडा, वह हो वडा सयाना।
हुई "कीर्ति" जग मे भारी, मुक्ति किया ठिकाना ॥
मैं कोई झूठ बोलिया ? कोई ना। मैं कोई कुफ तोलिया ? कोई ना।
वस फिर धर्म कमा लो, प्रभु जी के गुण गा लो ॥

— ० —

प्रेम दीवाना

[तर्ज मन बस का प्रेम पुजारी [illegible]]

मन बन का प्रेम दीवाना ॥ ध्रुव ॥

प्रेम की चादर प्रेम बिछौना
प्रेम पलंग पर प्रेम से सोना ।
प्रेम का हो सब बाना ॥

प्रेम की वाणी प्रेम की विद्या
प्रेम ही पाठ और प्रेम ही शिक्षा ।
प्रेम से जीवन पाना ।

प्रेम की नगरी प्रेम का मन्दिर
प्रेम की ज्योति जगा घट अन्दर ।
प्रेम के दर्शन पाना ॥

प्रेम ही जीवन प्रेम ही आयु,
प्रेम जगत और प्रेम ही वायु ।
प्रेम से 'मधु' फैलाना ॥

— —

महान् पर्व

[तर्ज [illegible] — —]

आया पर्व महान् ! समझाये आया पर्व महान् ॥ ध्रुव ॥
जो करता इस का आराधन
पावन होता उस का तन मन ।
हो जीवन कल्याण ॥

सम्वत्सरी है नाम प्यारा ,
भव सागर से तारण हारा ।
जो करता गुण गान ॥
पर्व आराधो नरतन पाई ,
धर्म की जग मे कर लो कमाई ।
हो जाए उत्थान ॥
आपस के सब द्वेष मिटाओ ,
"कीर्ति" चहुं दिशि मे फैलाओ ।
मिल जाए पद निर्वाण ॥

— ० —

सारे द्वेष मिटाओ

[तर्ज- भगवान तेरे दर का सिंगार जा रहा है]

आया पर्व यह भारी, घर – घर खुशी मनाओ ।
आपस के द्वेष सारे, एक दम से तुम मिटाओ ॥ ध्रुव ॥
जीवन जो नर का पाया, इस को सफल बनाना ।
फंस लोभ, मोह मे न, यो ही समय गंवाओ ॥
अज्ञान जग मे फैला, चहुं ओर है अन्धेरा ।
ज्ञान – प्रकाश से तुम, अन्धेर सब नशाओ ॥
हो वीर के उपासक, कुछ वीरता तो सीखो ।
बन प्रेमी इस जगत मे, बिछुडे हृदय मिलाओ ॥
सब खामियां मिटा कर, आगे कदम बढाना ।
धर्म अहिंसा प्यारा, ससार मे फैलाओ ॥
कर धर्म — ध्यान निश दिन, कर्मों का जाल तोडो ।
"यश" की सुगन्ध से तुम, ससार सब महकाओ ॥

— ० —

भला – बुरा क्या गीना ? हम ज्ञान-तुला पर तोलें ॥
अजी सुन लो, अजी सुन लो, यह ज्ञान का तराना ॥
वैर – विरोध भुला कर, अब सब को गले लगाएं ।
नित वहे प्रेम की धारा, हम सब को आज निभाएं ॥
अजी सुन लो, अजी सुन लो, यह ज्ञान का तराना ॥
पिछली भूलों को भूलो, फिर अब न इन्हें दोहराना ।
पोर-परहित मे जुट कर के, "यश" सौरभ को फैलाना ॥
अजी सुन लो, अजी सुन लो, यह ज्ञान का तराना ॥

क्रोध शैतान है

[तर्ज- छोड बाबुल का घर, मोहे पी के]

क्रोध दुःख खान है, क्रोध से हान है,
क्रोध छोडो मनुज ॥ ध्रुव ॥
गुस्सा पागल बना देता इन्सान को,
क्रोध झटपट भुला देता ईमान को ।
क्रोध हैवान है, क्रोध शैतान है,
क्रोध छोडो मनुज ॥
क्रोध चाण्डाल से बढ के चाण्डाल है,
जिस पे चढता, वह बनता यहाँ बे हाल है ।
खोटी यह बान है, नर्क निशान है,
क्रोध छोडो मनुज ॥
क्रोध त्यागे, क्षमा — धर्म जो आदरे,
"कीर्ति" भारी हो, विश्व पूजा करे ।
पाता सद्ज्ञान है, बनता भगवान है ॥
क्रोध छोडो मनुज ॥
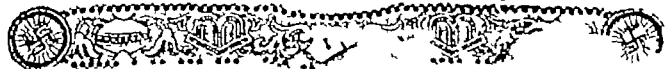
वह प्रेम क्या ?

[तर्ज़ इन्सान क्या ? जो ठोकरें नसीब की न सह — — —]

वह प्रेम क्या ? जो जिन्दगी को सिन्धु से न तार दे।
वह प्रेम क्या ? मनुष्य को न कष्ट से उबार दे॥ ध्रु व॥

वह प्रेम क्या ? जो दायरे में वासनाओं के रहे।
वह प्रेम क्या ? जो जिन्दगी को धर्म पर न वार दे॥

वह प्रेम क्या ? जो मित्र के न पूर्ण कार्य कर सके।
वह प्रेम क्या ? जो मित्रवर की राह में धूल डार दे॥

वह प्रेम क्या ? जो दुश्मनों को भी न मित्र कर सके।
वह प्रेम क्या ? जो जिन्दगी को चैन न बहार दे॥

वह प्रेम क्या ? जो शीश पर कटाए धम को बन रहे।
वह प्रेम क्या ? जो बादलों को मानु बन न फाड़ दे॥

वह प्रेम क्या ? जो विश्व में न 'कीर्ति' कमा सके।
वह प्रेम क्या ? जो प्रेममय न जिन्दगी गुजार दे॥

—: :—

गुरुदेव से ?

[तर्ज़ परदेसी बलम तुम जाओगे तुम्हें मेरी कसम]

गुरुदेव ! विहार कर जाओगे।
कब आन दरश दिखलाओगे॥ ध्रु व॥

तुम पञ्च महाव्रत धारी हो
इस जन पीर पर उपकारी हो।
जिन मोह—ममता सब मारी है

कब वाणी — सुधा बरसाओगे ?
कब धर्म — बाग सरसाओगे ?

मोह—निद्रा से हम को जगाया है,

फिर, कब आ हमें समझाओगे ?
वीर—सन्देश फिर कब सुनाओगे ?
विनती है, हमें न भुलाना जी,
फिर शीघ्र दरश दिखलाना जी।
और ज्ञान की ज्योति जगाना जी,
"यश" सौरभ कहो, कब फैलाओगे ?
सोई जनता को कब फिर जगाओगे ?
अज्ञान — अन्धेरा नशया है।
सच्चा मारग हमें बतलाया है,

—०—

विहार के समय शिक्षा

[तर्ज : तेरे कूचे में अरमानों की दुनियां ले]

यही शिक्षा हमारी है, प्रभु सुमरण सदा करना।
त्याग कर पाप मार्ग को, धर्म मार्ग पे पग धरना ॥ ध्रुव ॥
बडे ही पुण्य से तुम को, मिला है नर रतन प्यारा।
छोड दुनियावी झझट को, मनुष्य जीवन सफल करना ॥
यह धन-वैभव जमाने मे, नही रहता सदा कायम।
करो उपयोग शुभ इसका, दुखी सेवा सदा करना ॥
लगाई खूब रौनक तुम ने, आकर के चौमासे मे।
हमारे बाद भी आकर, यहाँ पर धर्म तुम करना ॥
चौमासे मे यदि हम से, हुआ अपराध हो कोई।
खिमाते हैं मुनि सब से, हृदय से सब क्षमा करना ॥
करो ऐसे कर्म जिस से, जमाने मे भलाई हो।
सदा "यश" की सुगन्धी से, सुगन्धित विश्व तुम करना ॥

—०—

विहार-सन्देश

[तर्ज बन तुम्ही बने परदेश जगा कर ———]

अब कर के हम विहार, सुनो नर—नार
यही है भाव पर शिक्षा तुम्हें सुनाय ॥ ध्रुव ॥

शुभ पुण्य उदय जब आया है तुमने यह अवसर पाया है।
कर धर्म-ध्यान नित इस को सफल बनावें। यही शिक्षा तुम्हें सुनावें ॥
मुनियों ने यहां चौमास किया तुम ने भी अच्छा लाभ लिया।
अब इसी तरह पीछे भी ठाठ जमावें। यही शिक्षा तुम्हें सुनावें ॥
सामायिक-संवर नित्य करना जप-तप कर कलिमल को हरना।
सत्संगति कर के जीवन सफल बनावें। यही शिक्षा तुम्हें सुनावें ॥
यदि भूल हुई कोई हम से या कहा — सुना हो कुछ तुम से।
सब करें क्षमा मुनिवर भी तुम्हें खिमावें। यही शिक्षा तुम्हें सुनावें ॥
जीवन का लक्ष्य बना कर के दुःख दीन-दुखी के मिटा कर के।
उपकार को करके "मधु" सौरभ फैलावें। यही शिक्षा तुम्हें सुनावें ॥
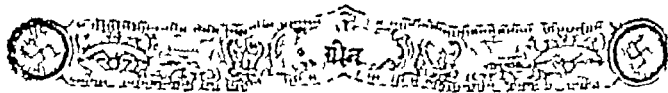
गुरुदेव की विदाई

[तर्ज- नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे ढूँ ढूँ रे सांवरिया]

कर के आज विहार गुरुवर, चल दिए और नगरिया।
गुरुदेव की याद मे छलके, नयनो की गागरिया॥ ध्रुव॥
नगर जनो के अहो भाग्य से, गुरुवर आप पधारे थे,
जिन-वाणी अमृत-वर्षा से, भविजन पार उतारे थे।
फिर भी आकर नगर जनो की, लेना शीघ्र खबरिया,
कर के आज विहार गुरुवर, चल दिए और नगरिया॥
गुरुदेव गुणवान जिन्हो का, सुयश जगत मे छाया जी,
जिसने लीनी शरण आप की, उसने सब कुछ पाया जी।
छोड कुमारग शीघ्र चला वह, शिवपुर की डगरिया,
कर के आज विहार गुरुवर, चल दिए और नगरिया।
आप हो गुरुवर परम दयालु, हम को भूल न जाना जी,
आग्रह है अनुरोध आप से, शीघ्र दरश दिखलाना जी।
जिस से सुकृत पूँजी की हम, बांध सके गठरिया'
कर के आज विहार गुरुवर, चल दिए और नगरिया॥
सेवा भक्ति नही जरा भी, गुरुवर की बन पाई जी,
साश्रु नयन और विगलित मन से, देते आज विदाई जी।
भूल चूक "यश" क्षमा करो और, रखना मेहर नजरिया,
कर के आज विहार गुरुवर, चल दिए और नगरिया॥

— ० —

विदाई गीत

[तर्ज- छोड़ बाबुल का घर, मोहे पी के नगर ———]

यहाँ पर निवास कर, आज तज यह नगर—
विहार करते हैं हम ॥ ध्रुव ॥

पूर्व पुण्योदय से मिला नर जनम ।
इस को सफल करो प्यारे, कर शुभ करम ।
जीवन शुद्ध बने यही शिक्षा तुम्हें
विहार करते हैं हम ॥

प्रेम से आपने सब की सेवा करी
याद हमको रहेगी यह भक्ति करी ।
अन्य मुनियों को पल सेवा में लाना मन
विहार करते हैं हम ॥

भूल हो यदि कोई तो क्षमा दीजिये ।
हम खिमाते तुम्हें सब क्षमा कीजिये ।
अपना ही जान कर, भूल करो दर गुजर
विहार करते हैं हम ॥

नित्य संवर, सामायिक व पौषध करो
कर धर्म-ध्यान कर्मों के मल को हरो ।
कहे "कीर्ति" यही, शिक्षा मानो सही
विहार करते हैं हम ॥

वीर-वाणी

[तर्ज- यह मीठा प्रेम प्याला, कोई पिएगा

यह सच्ची वीर की वाणी, कोई सुनेगा उत्तम प्राणी ॥ ध्रुव ॥
वाणी जग का दुःख मिटाए, सोता सारा देश जगाए।
महिमा सब ने जानी, कोई जानेगा उत्तम प्राणी ॥
जन्म—मरण–दुःख मेटन हारी, ऐसी है जिन वाणी-प्यारी।
कह गए आतम ध्यानी, कोई कहेगा उत्तम प्राणी ॥
दुराचार से दूर हटावे, सदाचार में जग को चलावे।
बात यह सब ने मानी, कोई मानेगा उत्तम प्राणी ॥
चन्दना अर्जुनमाली तारे, भव–जल डूबते शीघ्र उबारे।
तिर गए गौतम ज्ञानी, कोई तिरेगा उत्तम प्राणी ॥
जिन–वाणी गङ्गा मे नहावे, उस का जन्म सफल हो जावे।
मिल जाए पद निर्वानी, कोई पाएगा उत्तम प्राणी ॥
'श्री श्यामलाल' गुरुदेव कृपा से, "कीर्ति" उत्तम बात प्रकाशे।
सफल करो जिंदगानी, कोई करेगा उत्तम प्राणी ॥

— ० —